॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-14 / अंक- 12 / आश्विन कृ. 4 से आश्विन शु. 2 सं. २०७२ वि. 1-15 अक्टूबर 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / मूल्य- 5/-

ऐतिहासिक रहा भोपाल का 10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

महासम्मेलन को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी- केसरी।

संभालें भाषा की विरासत- प्रधानमंत्री

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल के लाल परेड ग्राउंड पर तीन दिवसीय विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सिंहस्थ की तैयारी से पहले ही भोपाल की धरती पर हिंदी का महाकुंभ हो रहा है। इस बार सम्मेलन में हिंदी भाषा पर बल देने का प्रयास किया गया है। जब भाषा होती है तब हमें अंदाज नहीं होता है कि उसकी ताकत क्या है। सदियों बाद जब वह किसी और के हाथ लग जाती है तो सालों तक यह पता लगाने की कोशिश की जाती है कि लिखा क्या है।

पीएम मोदी ने कहा कि आज सुनने को मिलता है कि संस्कृत भाषा में ज्ञान के भंडार हैं। संस्कृत के विद्वानों की कमी के कारण हमें वह ज्ञान नहीं मिल पा रहा है। हम धीरे-धीरे संस्कृत से अलग हो गए, इसलिए हमें वह ज्ञान नहीं मिल पाया। हर पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि भाषा की विरासत को संभाला जाए, अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि हर हाल में हमें अपनी विरासत को सुरक्षित रखना होगा। भाषा के लुप्त होने पर उसकी कीमत का पता चलता है। हर पीढ़ी का दायित्व है भाषा को मजबूती देना। मेरी मातृभाषा गुजराती है, लेकिन अगर में हिंदी नहीं जानता तो मेरा क्या होता। मैं यहां हिंदी साहित्य नहीं बल्कि भाषा की चर्चा कर रहा हूं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमें धीरे-धीरे आदत डालना चाहिए कि हिंदुस्तान की भाषाएं अपनी लिपी में तो हों, लेकिन नागरी लिपी में भी लिखी जाएं। हमें हिंदी की ताकत का अंदाजा है। भाषा जड़ नहीं हो सकती, वह हवा का झोंका है, जहां से गुजरेगी, वहीं की सुगंध लेकर आएगी। भाषा की यही ताकत होती है, जिस पीढ़ी से गुजरती है, उसके लिए कुछ न कुछ लेकर आती है। भाषा चैतन्य है। उन्होंने कहा कि क्या हम हिंदी और तमिल भाषा का एक साथ वर्कशॉप कर सकते हैं। हमें हिंदुस्तान की सभी भाषाओं की उत्तम चीजों को हिंदी का हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह एक अनवरत प्रक्रिया है, इससे भाषा समृद्ध होगी। हर राज्य के पास अपनी मातृभाषा का खजाना है, हमें उसे हिन्दी से जोड़ने का प्रयास करना होगा। पीएम ने अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए कहा कि सार्वजनिक जीवन में रहते हुए मैं जब..... शेष पृष्ठ-4 पर

अगला सम्मेलन अमेरिका में

भोपाल। अमेरिका में वर्ष 2014 से शुरू हुआ अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन अगले साल 2016में 4 से 6मार्च तक न्यूजर्सी के रटगर्स विश्वविद्यालय में होगा। सम्मेलन का विषय लोकतांत्रिक भाषा के रूप में हिंदी का विकास रखा गया है। यह जानकारी बुधवार को सम्मेलन के संयोजक अशोक ओझा ने संवाददाताओं को दी। उन्होंने बताया कि अमेरिका में रहने वाले प्रवासी भारतीय और हिंदी भाषा से जुड़े संगठनों ने इस सम्मेलन की शुरूआत की थी। इसके बाद से हर वर्ष अमेरिका में अंतराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। उनका कहना था कि भारत में जब विश्व हिंदी सम्मेलन की शुर्आत हुई थी, तो यह भी कहा गया था कि इससे जुड़े सभी देश अपने-अपने स्तर पर हिंदी सम्मेलनों का आयोजन करेंगे। इसे देखते हुए अंतराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की शुर्आत अमेरिका में हुई है।

- देखते ही बनती थी समारोहस्थल की भव्यता
- ३९ देशों के झंडे थे आकर्षण का केन्द्र
- अलग-अलग वेश भूषा में थे विदेशी मेहमान
- विदेश मंत्री एवं मुख्यमंत्री द्वारा प्रायोजित था भोज
- मेहमान नवाज़ी में मुख्य मंत्री शिवराज सिंह चौहान रहे सबसे आगे

सम्मेलन में छाई आईटी कम्पनियां

भोपाल। राजधानी में 10 से 12 सितंबर तक होने वाला दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन आईटी कंपनियों का बाजार बन गया है। गूगल, एप्पल सहित कई विदेशी कंपनियों का प्रचार-प्रसार हिंदी सम्मेलन के माध्यम से किया जा रहा है। आईटी कंपनियां हिंदी भाषा के नाम पर व्यापार कर रही हैं। यह आरोप बुधवार को राजधानी के साहित्यकारों ने संवाददाताओं से चर्चा में लगाए। साहित्यकारों ने हिंदी सम्मेलन की मेजबानी भोपाल को दिए जाने को भी राजनीति बताया। उनका आरोप था कि एनआरआई वोटर को लुभाने के लिए मोदी सरकार ऐसा कर रही है। राष्ट्रीय सेक्युलर मंच, कौमी एकता ट्रस्ट, प्रगतिशील लेखक, गांधी भवन ट्रस्ट सहित अन्य संगठनों का आरोप था कि इस बार विश्व हिंदी सम्मेलन को राजनीतिक रूप दे दिया गया है। साहित्यकार राजेश जोशी का कहना था कि ऐसा पहली बार हो रहा है, जब विश्व हिंदी सम्मेलन के शुभारंभ और समापन की जिम्मेदारी नेता और अभिनेता को सौंपी गई है। साहित्यकार, कवियों सहित भाषा का ज्ञान रखने वालों को सम्मेलन से दूर रखा गया है। साहित्यकारों का आरोप था कि राजधानी में हिंदी सम्मेलन कर व्यापमं घोटाले को ढंकने का प्रयास किया जा रहा है। मप्र हिंदी भाषी राज्य है। ऐसे में प्रदेश में हिंदी सम्मेलन की जरूरत ही नहीं थी। साहित्यकारों की मौत का मुद्दा उठाने की अपील साहित्यकार और लेखकों का आरोप था कि भाजपा शासित राज्यों में साहित्यकार, नाटककार और स्वतंत्र विचारकों की हत्या हो रही.... शेष पृष्ठ-4 पर

योग से लाभ ही लाभ : सरोज शर्मा

सुमनकुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के शिष्य प्रतिवर्ष वेदमंत्रों से यज्ञ कराते हैं। इसी यज्ञ की लगातार ग्यारहवें वर्ष ग्रेटर नोएडा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर 4 से 6 सितम्बर तक ऋग्वेद महायज्ञ अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में तथा योग शिविर सरोज शर्मा योगाचार्य के मार्गदर्शन में हुआ। यजमान सुमन कुमार वैदिक प्रतिवर्ष अपने पिता जी की स्मृति में सार्वजनिक यज्ञ का आयोजन अपने सैक्टर के प्रत्येक निवासी को निर्मंत्रित कर, करते हैं। महायज्ञ के ब्रह्मा अरविन्द शास्त्री (बरनावा) ने प्रतिदिन प्रात: सायं यज्ञ में ऋग्वेद के नवें मण्डल के मंत्रों की आहुति के साथ ही उनका भावार्थ भी बताया। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों से भगवान कृष्ण अपनी पत्नी रुक्मणी से कहते थे कि देवी! यह संसार तो चलता आ रहा है, चलता रहेगा, परन्तु तुम मुझे गोपिकाओं में विनोद करने दो। मानव के द्वारा संकल्प और विकल्प ही मानव के गोपनीय विषय हैं, जिनसे मनुष्य देवता और दैत्य कुछ भी बन सकता है। हम दैत्य क्यों बनें, इस पर विचारना है। भगवान कृष्ण की सोलह हजार आठ गोपिकाएं वेद की 'ऋचाएं' थीं, जिनके ज्ञान से वह विचरते रहते थे।

डॉ0 पवित्रा वेदालंकार (आचार्या, गुरुकुल सासनी) ने अपने उद्बोधन में कहा कि महापुरुषों से हमें एक महान जीवनशक्ति प्राप्त होती है। भगवान कृष्ण के जीवन में कितनी व्यापकता थी।

पं0 महेन्द्र कुमार आर्य (प्रधान आर्य समाज, सूरजपुर) ने कहा कि हिन्दू समाज ने श्रीकृष्ण के आदर्श चरित्र का मजाक बनाकर उन्हें भोगी, विषयी और चोर बना दिया। योगीराज श्रीकृष्ण के परोपकारी आदर्श जीवन को भूलकर राधेकृष्ण कहकर पुकारने लगे। राधा एक संगठन था, जो कृष्ण ने कंस के अत्याचारों के विरुद्ध बनाया था।

सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि महापुरुषों का निर्माण राजमहलों में नहीं होता। भगवान कृष्ण और भगवान राम का निर्माण जेलों या वनों में होता है। आज का मानव भगवान कृष्ण का उच्चारण ही कर रहे हैं, और अंत:करण में कुछ और भरा हुआ है। कार्यक्रम में योगाचार्य सरोज शर्मा, रामपाल सिंह पतंजलि योग प्रभारी नोएडा, तथा मास्टर प्रताप सिंह पतंजलि योग प्रभारी, ग्रेटर नोएडा ने प्रतिदिन योग करने के लाभ तथा भोजन की शुद्धता और पौष्टिकता के विषय में बताया।

ओज, विद्रोह व क्रान्ति के कवि थे दिनकर

अमरोहा। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर युग चेतना के प्रखर कवि थे। उन्होंने अपनी कविताओं को लोक-संस्कृति, राष्ट्रीय स्वाभिमान और मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर समाज को एक नूतन दिशा दी। उनकी कविताओं में एक ओर ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति का स्वर है, तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। ये विचार यहां जेएस हिन्दू पीजी कालेज में प्रख्यात नवगीतकार डॉ0 माहेश्वर तिवारी ने व्यक्त किये। हिन्दी विभाग द्वारा राष्ट्रकवि दिनकर की 107वीं जयन्ती की पूर्व वेला में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री तिवारी ने भूषण के बाद उन्हें वीररस का सर्वश्रेष्ठ कवि कहा।

'राष्ट्रकवि दिनकर- व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर केन्द्रित इस व्याख्यान माला में श्री तिवारी ने 'हम कितने गहरे हैं, छिछला सागर क्या जाने/ धूप में जब भी जले हैं पांव, घर की याद आयी', तथा 'चूल्हे पर रोटी सेंकती है मां' आदि रचनाएं प्रस्तुत कर, खूब वाहवाही लूटी।

इस अवसर पर हिन्दी की एसोशिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ0 वन्दना रानी गुप्ता ने कहा कि वे एक प्रगतिवादी और मानवतावादी कवि थे। कार्यक्रम की संयोजक एवं हिन्दी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर डॉ0 बीना रुस्तगी ने दिनकर की कृतियों, विशेषकर हिमालय, कुरुक्षेत्र व रश्मिरथी की चर्चा करते हुए कहा कि कवि दिनकर के गद्य तथा पद्य साहित्य में राष्ट्रवाद व ओज कूट-कूट कर भरा है। उनकी कविताएं दिल को छूती हैं। श्री दिनकर बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर रहे। 1952 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाया गया, तथा 1964 से 1965 तक वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। उन्हें अनेक पुरस्कारों से विभूषित किया गया। डॉ0 रुस्तगी ने कहा कि 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जनपद के सिमरिया ग्राम में जन्मे दिनकर 1974 में दिवंगत हुए। राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष व एसोशिएट प्रोफेसर डॉ0 अशोक रुस्तगी ने दिनकर की अमर कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' का उल्लेख किया। डॉ0 बबलू सिंह, डॉ0 संयुक्ता चौहान, डॉ0 देशमित्र त्यागी व कुमारी जेबी फरहा ने भी राष्ट्रकवि दिनकर को नमन किया। अध्यक्षता डॉ0 वन्दना रानी गुप्ता ने की, तथा संचालन डॉ0 बीना रुस्तगी ने किया।

संक्षिप्त समाचार

योग से पूर्व भोजन शुद्ध करो : सरोज

जोधपुर (सुमन कुमार वैदिक)। 27 से 30 सितम्बर तक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के तत्वावधान में ऋषि स्मृति सम्मेलन में आचार्य दयानन्द जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आसन प्राणायाम का शिविर भी आयोजित किया गया, जिसका संचालन बहन सरोज शर्मा (गुडगांव) ने किया। योग शिविर में बहन सरोज शर्मा ने योग, प्राणायाम के साथ 'हम क्या खाएं और क्या न खाएं' विषय पर विशेष प्रकार से प्रकाश डाला। न्यास द्वारा आयोजित शिविर में श्रद्धालु नर-नारियों व बच्चों ने भारी संख्या में सहभागिता की।

अष्टम गायत्री महायज्ञ २५ से

महू (म०प्र०)। 25 से 31 दिसम्बर 2015 तक आर्यसमाज द्वारा अष्टम गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन किया जाएगा।

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नालन्दा (बिहार)। 13 से 20 सितम्बर तक आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न इस 8 दिवसीय शिविर में वैदिक कर्मकाण्ड, आर्ष ग्रन्थ परिचय, वैदिक सिद्धांत विमर्श के साथ ही योग-प्राणायाम का भी विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया गया।

यज्ञ सम्पन्न

कांकर-बाह (आगरा) मुकेश कुमार। साप्ताहिक ज्ञान यज्ञ में हजारों स्त्री-पुरूषों ने भाग लिया। यज्ञ समारोह सम्पूर्ण गांव के सहयोग से सम्पन्न हुआ। जंगल क्षेत्र जहां वातावरण शुद्ध था ऐसे मनमोहक स्थान पर कार्यक्रम का आयोजन अपने आप में महान काम है।

सामवेद यज्ञ सम्पन्न

रोहतक। वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर में त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ के पश्चात् स्वामी अमृतानन्द ने अपने प्रवचनों के माध्यम से वैदिक संस्कृति एवं आर्यत्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

ऐसे होते हैं आर्य

आर्य समाज, गंगापुर सिटी के भीष्म पिता पं. मदन मोहन आर्य

पं. मदन मोहन जी आर्य 73 वर्ष की आयु में भी नवयुवकों जैसा जोश रखते हैं इसीलिए आर्यवीर दल के संरक्षक हैं तथा जिनके द्वारा पांच आर्यवीर दल की नियमित शाखाओं तथा दो जीवित आर्यसमाजों का संचालन किया जा रहा है।

1. पं. मदन मोहन जी द्वारा 1975 में आन्दोलन कर कैला देवी पर पशु बली प्रथा बंद कराई।

2. राजस्थान से गौवंश रेल द्वारा अन्य प्रदेश को काटने के लिए भेजा जाता था। पं. मदन मोहन जी ने 1 अगस्त 1980 को रेल रोककर वापस गंगापुर सिटी लाकर सभी पशुओं को छुड़वाकर ग्रामीणों में बांट दिया।

3. राजस्थान में 1992 में सरकार की ओर से चलने वाली लाटरी को प्रतिबन्धित कराया।

4. आतंकी गुण्डों द्वारा व्यापारियों से चौथ वसूली जाती थी, वह बन्द करवाई।

5. लव जिहाद के अन्तर्गत भगाई गई 27 हिन्दू लड़कियों को वापस लाकर उनकी हिन्दू लड़कों से विवाह कराया, जिसमें आज एक पी.सी.एस. अधिकारी हैं।

6. कसाई मार्केट की हाईकोर्ट से 26 दुकानें बन्द कराईं। जिसके आदेश को लागू कराने के लिए मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे की गाड़ी को रोका।

7. इनके प्रभाव के कारण शहर के थानेदार सर्वप्रथम इनको महत्व देते हैं।

8. गऊशालाओं के संचालन में लाखों की व्यवस्था करते हैं।

9. गुरूकुलों को लाखों रुपये की आर्थिक सहायता एवं 25 छात्र-वृतियां इनके प्रयास से मिलती हैं।

10. 25 मार्च 2002 में ताजिए निकालने पर संघर्ष हुआ। जिसमें इन पर गोलियां चलाई गई पर प्रभु कृपा से ये नहीं बल्कि इनकी जगह 3 अन्य लोग मारे गए।

11. जून 2002 में सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने का आरोप मुसलमानों द्वारा लगाया गया परन्तु आप बा इज्जत बरी हुए।

12. आर्यसमाज के हर साल कई बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजन कराये जाते हैं। जिसमें कई हजार व्यक्ति सम्मिलित होते हैं।

(सुमन कुमार वैदिक
चलभाष : 9456274350)

महापुरुषों के इशारों को समझो

स्वामी दयानंद सरस्वती गंगा तट पर ठहरे हुए थे। पास ही एक गुस्सैल साधु भी रुका हुआ था। वह प्रतिदिन स्वामी जी को गालियां देता। स्वामी जी गाली सुनकर बस मुस्कुरा देते। इस आशा से कि एक न एक दिन वह खुद अपनी गलती का एहसास करेगा।

एक दिन स्वामी जी ने एक टोकरा फलों का उस साधु को भिजवाया। फल देखते ही वह ईर्ष्या से भरा हुआ असभ्य शब्द कहने लगा।

टोकरा लेकर वापस आ गया और सारी घटना का वर्णन कर दिया। स्वामी जी सुनकर बोले तुम अभी उनके पास वापस जाओ और कहो कि आप गालियां नहीं देते अमृत वर्षा करते हैं। स्वामी जी चाहते हैं कि उनके कारण जो आपकी ऊर्जा क्षय होती है, उसकी भरपाई फल खा कर करें।

भक्त ने साधु के पास जाकर वही बात कही। साधु ने इशारा समझ लिया कि ईर्ष्या से स्वास्थ्य का ह्रास ही होता है। वह तुरन्त स्वामी जी के पास आया और दीक्षा ली।

वेदमंत्र

पितुर्व पुत्राः क्रतुं जुषन्त श्रोषन्ये अस्य शासं तुरासः।
वि राय आर्णौंहुतः पुरुक्षुः पिपेश नाकं स्तृभिर्दमूनाः।।

(ऋग्वेद 1/68/5)

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्रभु के सच्चे पुत्र बन यज्ञात्मक जीवन बिताने की प्रेरणा की गयी है। पुत्र वह होता है, जो सुचरितों से पिता को प्रोणित करता है। अत: प्रभु के सच्चे पुत्र वही जीव हैं, जो पिता- प्रभु के आदेश को सुनते, सब बुराइयों का संहार करते, यज्ञात्मक जीवन बिताते हैं। उन्हें संसार का शासक परमात्मा स्वर्गभूत लोकों को प्राप्त कराता है। यज्ञ सहित प्रजाओं को उत्पन्न कर, प्रभु यही कहता है- यज्ञ से खूब फलो-फूलो, तुम्हारी इष्ट कामनाएं पूर्ण होंगी।

हम प्रभु के आदेश का पालन कर यज्ञार्थ धन प्राप्त करें, यज्ञ करें, और उसके सच्चे पुत्र बनें।

आलस्य दुर्बल मन वालों का एक मात्र शरण है।

संस्कृत संगीत संध्या में विचार व्यक्त करते आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री व उपस्थित जनसमूह- केसरी।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को दी श्रद्धांजलि

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
आमसेना (उड़ीसा)

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती (पूर्व नाम- पं. देशपाल दीक्षित) का 83 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के वणजी ग्राम में जनमे श्री दीक्षित ने आर्य समाज के संपर्क में आकर भी गुरूकुल झज्जर में विद्याध्ययन किया। स्नातक बनकर बिहार या झारखण्ड के सिमडेगा में पं. हरिशरण के साथ वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार कार्य में लग गए। बिहार के उस पिछड़े इलाके में लगभग पचास वर्ष उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। कुछ समय की बीमारी के पश्चात् 83 वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास उनकी भतीजी के पास हो गया। सूचना मिलने पर आर्य समाज सिमडेगा में शोक सभा का आयोजन किया गया।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी गुरूकुल आश्रम आमसेना की उपस्थिति में सैकड़ों स्थानीय श्रद्धालुओं ने उनके शांति यज्ञ में भाग लिया और उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की। इस प्रकार गुरूकुल आश्रम आमसेना में शोकसभा में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली दी गई।

संस्कृत संगीत संध्या सोल्लास सम्पन्न

सूर्यकान्त मिश्र
नई दिल्ली

अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज बी-2 जनकपुरी में विश्वशांति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि विज्ञान, कला, संस्कृति और साहित्य सबके विकास के लिए संस्कृत भाषा कामधेनु के समान है। संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। शब्दनिर्माण की समस्या का समाधान संस्कृत में है। संस्कृत भाषा, साहित्य, भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकताके बिना न तो आत्मिक शान्ति संभव है, न विश्वशान्ति ही। वर्तमान विसंगत परिवेश का समाधान संस्कृत, संस्कृति और संस्कारों से ही हो सकता है।

भजन सम्राट श्री फणीश पवार एवं उनके सहयोगियों ने संस्कृत संगीत संध्या से समां बांध दिया। युवा कवि श्री विनय शुक्ल विनम्र की कविताओं ने सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम में समाजसेवी सर्व श्री यशपाल आर्य, वेदप्रकाश, ईशकुमार गक्खड़, हीरालाल चावला, राजीव आर्य, प्रि. अरूण आर्य, सुरिन्द्र चौधरी, अशोक जुनेजा, विनोद बब्बर, वरूणेन्द्र कथूरिया, नरेन्द्र आर्य सुमन, रमेश चन्द्र गुप्त आदि की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। प्रख्यात् संस्कृत विद्वान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ऋषि दयानन्द को समर्पित भजन संध्या

ईश्वर दयाल माथुर
जयपुर (राजस्थान)

दिव्य वैदिक सत्सं मण्डल, मानसरोवर के पांचवें वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में सैक्टर 56 के चित्रकूट पार्क में भजनसंध्या का आयोजन हुआ।

आर्य जगत के श्रेष्ठ संगीतज्ञ, भजनोपदेशक नरेश निर्मल ने अपने सहयोगियों सहित माधुर्य का संचार किया। वेदों का प्रादुर्भाव, आध्यात्मिकता, समाज सुधार एवं राष्ट्रीय एकता लक्ष्य रहे। श्री निर्मल ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान वेदोद्धारक थे। वेदों के सत्य ज्ञान को आज भी कोई चुनौती नहीं।

समारोह में आचार्य उषर्बुद्ध, डॉ0 रामपाल विद्याभास्कर, आर्य समाज के प्रधान यशपाल यश, आर्य विदुषी श्रुति शास्त्री सहित नगर के सभी आर्य समाजों के अधिकारीगण उपस्थित रहे। मंच संचालन उत्साही ऋषिभक्त एवं मण्डल संस्थापक सुनील अरोड़ा का तथ कुशल प्रायोजन सतीश मित्तल का रहा।

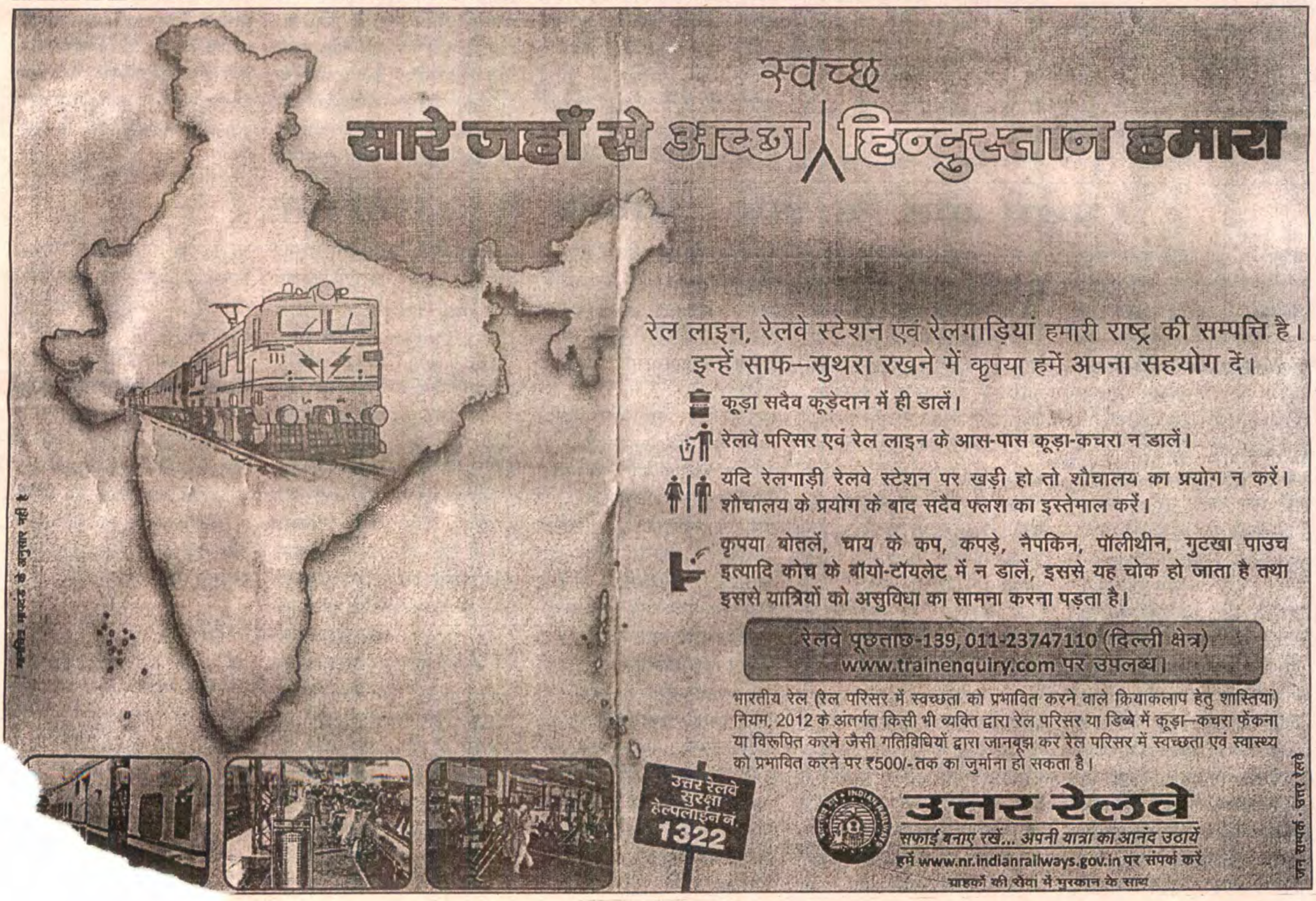

40 साल पुराना है अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का इतिहास

यादगार रहा भोपाल का १०वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

नई दिल्ली। विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें दुनिया भर से हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदीप्रेमी जुटते हैं। पिछले 40 वर्षों से यह दुनिया के अलग-अलग देशों में आयोजित किया जाता रहा है। हालांकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जैसी पहचान हिंदी को मिलनी चाहिए, वह आज तक नहीं मिल पाई है। हिंदी आज भी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनने को तरस रही है। इसकी लंबे समय से मांग होती चली आ रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा के प्रति जागरुकता पैदा करने, हिंदी की विकास यात्रा का आकलन करने, हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने आदि के लिए भारत सरकार ने पहली बार 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरुआत की। इसकी पहल पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने की थी। पहला सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में संपन्न हुआ था। तब से अब तक नौ विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर, मॉरीशस, नई दिल्ली, पुन: मारीशस, त्रिनिडाड व टोबेगो, लंदन, सूरीनाम, न्यूयार्क और जोहांसबर्ग में संपन्न हुए हैं। दसवां सम्मेलन भोपाल में आयोजित किया गया है।

अब तक हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन

पहला सम्मेलन: पहला सम्मेलन 10 जनवरी से 14 जनवरी 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति बी डी जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष मधुकर राव चौधरी उस समय महाराष्ट्र के वित्त, नियोजन व अल्पबचत मंत्री थे। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का बोधवाक्य था- वसुधैव कुटुम्बकम। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आए एक प्रतिनिधिमंडल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

दूसरा सम्मेलन: दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीसस की राजधानी पोर्ट लुई में 28 अगस्त से 30 अगस्त 1976 तक चले विश्व इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह के नेतृत्व में 23 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

तीसरा सम्मेलन: तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी नई दिल्ली में 28 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 1983 तक किया गया। सम्मेलन में कुल 6,566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आए 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिंदी की सुप्रसिद्ध कवियत्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं।

१०वां विश्व हिन्दी सम्मेलन
१०-१२ सितंबर, २०१५
भोपाल, भारत

चौथा सम्मेलन: चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 2 से 4 दिसंबर 1993 तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। 17 साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। म्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

पांचवां सम्मेलन: पांचवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 4 अप्रैल से 8 अप्रैल 1996 के बीच त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफस्पेन में हुआ था। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक थे हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमंडल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल माता प्रसाद थे। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिंदी। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठा सम्मेलन: छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में 14 से 18 सितंबर 1999 तक आयोजित किया गया। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था- हिंदी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्यमंत्री वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। प्रतिनिधिमंडल के उपनेता थे प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के 50वें वर्ष में आयोजित किया गया। यही वर्ष संत कबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल थे।

सातवां सम्मेलन: सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 5 से 9 जून 2003 के बीच सुदूर सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में हुआ था। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिंदी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक थे जानकी प्रसाद सिंह और इसका केंद्रीय विषय था- विश्व हिंदी: नई शताब्दी की चुनौतियां। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मंत्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें 12 से अधिक देशों के हिंदी विद्वान व अन्य हिंदी सेवी सम्मिलित हुए।

आठवां सम्मेलन: आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन 13 जुलाई से 15 जुलाई 2007 तक अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में हुआ था। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय था- विश्व मंच पर हिंदी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से संबंधित व्यवस्था अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की थी। इसके लिए एक विशेष वेबसाइट का निर्माण भी किया गया।

नौवां सम्मेलन: नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन 22 से 24 सितंबर 2012 तक दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहांसबर्ग में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग 300 भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

दसवां सम्मेलन: दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 12 सितंबर के बीच भोपाल में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय- हिंदी जगत: विस्तार एवं संभावनाएं। सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हिस्सा लिया।

प्रथम पृष्ठ के शेष- भोपाल में आयोजित.....

पहली बार गुजरात के बाहर निकला और हिंदी बोला तो लोग पूछते थे कि मोदी जी आप इतनी अच्छी हिंदी कैसे बोलते हैं। मैंने चाय बेचते-बेचते हिंदी सीखी। व्यापारी ट्रेन में आते-जाते थे, मैं उन्हीं से बात करता था। मैंने यूपी से आने वाले दूध व्यापारियों से हिंदी सीखी। मैं मंगोलिया गया, वहां भी हिन्दी भाषा का आकर्षण है, हिंदी भाषा बोलने वाले हैं। रूस में हिंदी बोलने वाले बहुत लोग मिलेंगे। पीएम मोदी ने कहा कि कई देशों में हिंदी पहुंचाने का काम हमारी फिल्म इंडस्ट्री ने किया। आगे आने वाले दिनों में हिंदी का महत्व बढ़ने वाला है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि भाषाशास्त्रियों के मुताबिक, दुनिया में 6000 भाषाएं हैं। 21वीं सदी के अंत तक इनमें से 90 फीसद लुप्त हो जाएंगी। इस चेतावनी को हम न समझे, हिंदी का संरक्षण न किया तो हम भी अपनी ताकत खो देंगे। इससे पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि मैं हृदय की गहराइयों से सभी मेहमानों का स्वागत करता हूं। उन्होंने विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की तारीफ करते हुए कहा कि वह दुनिया में जहां भी जाती हैं, हिंदी बोलती हैं। वहीं उन्होंने पीएम मोदी के विदेशों में हिंदी में संबोधन की सराहना की। वहीं सुषमा स्वराज ने अपने संबोधन में पीएम मोदी का इस बात के लिए आभार जताया कि उन्होंने कार्यक्रम भोपाल में करने की अनुमति दी। उन्होंने कहा कि भोपाल हिंदीप्रेमियों का शहर है। मैं भी चाहती थी कि यह कार्यक्रम केवल और केवल भोपाल में हो, क्योंकि मैं भी मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करती हूं। विदेश मंत्री ने कहा कि पिछले सम्मेलनों की तुलना में इस सम्मेलन का स्वरूप बहुत अलग है। पहले के सम्मेलन साहित्य पर आधारित थे, इस बार भाषा पर आधारित है। हमें हिंदी के संरक्षण की चिंता करनी पड़ रही है, यह चिंता का विषय है। सुषमा ने कहा कि पूर्व के सम्मेलन भी भाषा आधारित होते तो ऐसी स्थिति नहीं आती। यह सम्मेलन भाषा की उन्नति के लिए है। चीनी के राष्ट्रपति चीनी में बोलते हैं, जापान के प्रधानमंत्री जापानी में बोलते हैं, रूसी राष्ट्रपति अपनी भाषा में बोलते हैं, ऐसे में हमारे प्रधानमंत्री भी विदेशों में हिंदी में बोलते हैं, यह देखकर गर्व होता है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने एक डाक टिकट जारी किया। उन्हें यहां हिंदी में बना विशेष लोगो प्रदान किया गया। पीएम ने इस दौरान सम्मेलन स्मारिका के साथ-साथ गगनांचल (अशोक चक्रधर द्वारा संपादित), प्रवासी साहित्य जोहानिसबर्ग से आगे सहित तीन पुस्तकों का भी विमोचन किया। 10 से 12 सितंबर तक चलने वाले दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन की थीम हिंदी जगत: विस्तार एवं संभावनाएं रखी गई है। तीन दिन तक समानांतर सत्रों में विद्वानों और प्रतिभागियों ने 12 विषयों पर अपने विचार रखे। सत्र विषयों पर दी गई अनुशंसाएं 12 सितंबर को समापन समारोह में रखी गयी। इस सम्मेलन में देश-विदेश के 5000 से ज्यादा विद्वान और मेहमान हिस्सा ले रहे थे। गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने समापन समारोह को संबोधित किया। गिरमिटिया देशों में हिंदी, विदेशों में हिंदी शिक्षण- समस्याएं और समाधान, विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा, अन्य भाषा भाषी राज्यों में हिंदी, विदेशी नीति में हिंदी, प्रशासन में हिंदी, विज्ञान क्षेत्र में हिंदी, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी, विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाएं, बाल साहित्य में हिंदी, हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता, देश और विदेश में प्रकाशन: समस्याएं एवं समाधान मुख्य विषय रहे। उद्घाटन समारोह में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, विदेश राज्य मंत्री वीके सिंह, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद, गृह राज्यमंत्री किरण रिजिजू, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी, गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा, झारखंड के मुख्यमंत्री रघुवर दास, मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान शामिल हुए।

आईटी कम्पनियों का...

है। उन्होंने हाल में कन्नड़ लेखक एमएम कुलबुर्गी की हत्या का मुद्दा विश्व हिंदी सम्मेलन में उठाने की मांग शामिल हो रहे साहित्यकार और भाषाविदों से की है। वीके सिंह का बयान शर्मनाक विदेश राज्य मंत्री वीके सिंह के बयान पर साहित्यकारों ने कड़ा विरोध दर्ज कराया। सिंह ने मीडिया से चर्चा में कहा था कि पहले जो हिंदी सम्मेलन हुए हैं, उनमें साहित्यकार पेपर पढ़ते थे और शराब पीकर चले जाते थे। इस बार ऐसा नहीं होगा। इस पर साहित्यकार राजेन् शर्मा का कहना था कि सेना के फीसदी जवान शराब पीते हैं, ले उन्हें शराबी नहीं कहा ज उनकी पहचान उनके की जाती है

महर्षि दयानंद के नारी-शिक्षा में योगदान पर चर्चा करते प्रधान जी- केसरी

उपसभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा

पूरी मेहनत से करें पढ़ाई

अरविन्द पाण्डेय
कोटा (राजस्थान)

आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया है, इसी से मानव को संस्कारित किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे जिनकी प्रेरणा से ही भारत में सर्वप्रथम जालंधर में कन्या विद्यालय की स्थापना हुई। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय महावीर नगर प्रथम में छात्र–छात्राओं को आर्य समाज एवं पंजाबी समाज जन सेवा समिति द्वारा स्कूल किट बैग वितरण कार्यक्रम में व्यक्त किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वार्ड पार्षद गोपालराम मण्डा ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सतत परिश्रम तथा संघर्ष द्वारा साधारण व गरीब व्यक्ति भी अपने आप को ऊंचाइयों तक ले जा सकता है। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा है कि वे खुद बचपन से ही संघर्ष करते हुए आगे बढ़े है, उन्होंने आर्य समाज एवं पंजाबी जनसेवा समिति के सेवाकार्य की प्रसंशा की। आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने विद्या से विनम्रता से पात्रता प्राप्त कर जीवन सफल करने की प्ररेणा दी। महर्षि दयानन्द वेदप्रसाद समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि विद्यार्थी को प्रतिदिन अपने से बड़ों, माता–पिता व गुरूजनों को नमस्ते करनी चाहिए।

पंजाबी जनसेवा समिति के महामंत्री दर्शन पिपलानी ने कहा कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। अतः पूरी मेहनत व लगन के साथ पढ़ाई करें व अपना उद्देश्य पूरा कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय की प्रधानाचार्या संगीता जोशी ने सभी अतिथियों का विद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया। इस अवसर पर पंजाबी जनसेवा समिति के संयुक्त सचिव संजय निझावन, उपाध्यक्ष वीर कुमार बधवा, समाजसेवी जमना शंकर व पदम कुमार गालव तथा विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाएं उपस्थित थे।संचालन रूपेश प्रताप सिंह ने किया।

ओम साधना मंडल द्वारा वेद–यज्ञ–योग प्रचार

जम्मू। संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दयानन्द विदेह जी ने आर्य समाज बक्शी नगर, आ. स. गांधीनगर, आ. स. त्रिकुटी नगर, तथा आ. स. रेहाड़ी कालोनी में यज्ञ किया है। सुगंधि अर्थात् यशस्वी जीवन। योग क्या है? चित्त वृतियों को बाहर से आन्तरिक चेतना की ओर लगाना। आसन–प्रणायाम में सहयोगी है। परन्तु सब कुछ नहीं। योग है अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसर होना। जागरूक होकर जीवन में आगे बढ़ना। योग है मनसा–वाचा–कर्मणा एक ब्रह्म की सृष्टि की सेवा करना।

श्री रत्नलाल जुतसी जी के कनिष्ठ भ्राता जी निधन पर तीन दिनों तक श्राद्ध किया है। इस श्रद्धा से माता–पिता की, वृद्धों कीसेवा करना श्राद्ध है। गया श्राद्ध गये क़हते है। प्राण–जीवन को इत्यादि, विषय मंत्र (वायुनिलमथेदं) के आधार पर विस्तार से समझाया। जीवात्मा की गति कर्मो के आधार पर निश्चित होता है। सर्व श्री भारत भूषण आर्य, रत्नलाल जुतसी, योगेश गुप्त, सतवीर गुप्त, महालक्ष्मी जी, पूर्णिमा जी के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

यज्ञ और सत्संग सम्पन्न

ब्रजमोहन भाटिया
करनाल।

ओम साधना मण्डल, करनाल में 14-15 नव0 को वेदमनीषी वेदव्याख्याकार स्वामी विद्यानन्द विदेह के जन्म दिवस के अवसर पर यज्ञ और सत्संग का आयोजन है। प्रबन्ध समिति की ओर से सभी श्रद्धालुओं को सादर आमंत्रित किया गया है।

आर्य समाज द्वारा स्कूल किट वितरित

अर्जुनदेव चड्डा
कोटा (राजस्थान)

पढ़ने की इच्छा शक्ति हो तो उसके लिए कोई भी राह कठिन नहीं। अपनी मेहनत व लगन के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। जीवन में ईमानदारी व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण है, इसे अपने जीवन में उतारें। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने इंद्रागांधी नगर स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं को स्कूल किट वितरित करते हुए व्यक्त किए। छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि विद्यार्थी अपनी विद्या प्राप्ती के साथ श्रेष्ठ एवं श्रेष्ठतर बनने का प्रयास करें। आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे. एस दुबे ने माता–पिता का सम्मान करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। आर्यसमाज तलवंड़ी के प्रधान श्रीचंद गुप्ता ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए समझाया है कि अपना कुछ समय स्वाध्याय करने में लगायें।

आर्य समाज जिला सभा की ओर से प्रधानाचार्य जुगराज राठौर एवं प्रधानाचार्या श्रीमती अलका माथुर को स्कूल की लाइब्रेरी हेतु महर्षि दयाानंद सरस्वती कृत अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए गए। विद्यालय परिसर में पहुंचने पर प्रधानाचार्या ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर स्कूल के अध्यापक अश्वनी गौतम, पदम सोगानी, बद्रीलाल मीणा एवं अन्य स्टाफ मेम्बर उपस्थित थे। प्रधानाचार्य जुगराज राठौर ने आर्य समाज जिला सभा कोटा को धन्यवाद किया एवं सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

यज्ञ सम्पन्न

बिल्सी (संजीव रूप)। आर्य समाज गुधनी–खैंसारा के तत्वावधान में आर्य समाज मंदिर में यज्ञ व वेदकथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्त्री पुरूषों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध वैदिक विद्वान, समाजसुधारक आचार्य संजीव रूप ने कथा वाचते हुए कहा कि संसार में सुख से जीने का सर्वोत्तम ढंग प्यार है। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि सब हमसे प्यार करें। और ऐसा तभी होगा जब हम निस्वार्थ भाव से सबके दुःख में शामिल होंगे और सबके सुख में भी शामिल हो यथासम्भव खुशियां बाटेगें। जब हमारा हृदय प्रेम से भरा होता है तो हम हानि में भी दुःख नहीं करते, अपमान में भी शोक नहीं करते। लोभ नहीं करते, ईर्ष्या नहीं करते, क्रोध व अहंकार से बचे रहते हैं।

आर्य समाज और गुरुकुलों से ही होगी भारतीय संस्कृति की रक्षा

फरीदाबाद (सुमन कुमार वैदिक)। आर्य कन्या गुरूकुल हसनपुर के तत्वावधान में 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन स्वामी कर्मवीर जी के मार्गदर्शन में गुर्जर भवन सैक्टर16 फरीदाबाद में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चौ. कृष्णपाल गुर्जर केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार ने कहा कि हमें अपनी संतानों को संस्कारित करना होगा। आर्य समाज और गुरूकुलों में भारतीय संस्कृति की रक्षा हो रही है। जहां ब्रह्मचारियों को योग व्यायाम सिखा उन्हें बलवान भी बना रहे है। 177 देशों ने योग दिवस 21 जून को मनाने की सहमति दे दी थी।

योग पुरुष आचार्य कर्मवीर जी ने गुरूकुलों में बालिकाओं के पढ़ाने का महत्व बताते हुए 20 वर्षो तक छात्रवृतियां गुरूकुल को देने की घोषणा के साथ लोगों से आवहान किया कि वह यहां बढ़–चढ़कर दान दे। कार्यक्रम के अध्यक्ष पं. मदन मोहन आर्य (गंगापुर सिटी) ने कहा कि भारत में बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना लगभग एक साथ हुई। एक ने राष्ट्रवादी और दूसरे ने राष्ट्रद्रोही पैदा किये। उन्होंने उदाहरण देकर पं.मदन मोहन मालवीय जी के दान प्राप्त करने के विषय में बताया। आर्यकन्या गुरूकुल हसनपुर की छात्राओं ने वेद पाठ और भजनों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की। कार्यक्रम का संयोजन अमन सिंह शास्त्री ने किया।

आर्यसमाज विज्ञान नगर के परिसर में प्राणायाम करते योगसाधक - केसरी।

योग के माध्यम से भारत विश्वगुरु बनने की राह पर

राकेश चड्ढा
कोटा (राज0)।

योग मानव जीवन के लिए अनिवार्य है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग के द्वारा संसार को एक निश्चित जीवन प्रणाली प्रदान की है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि को हम जीवन में अपनाकर श्रेष्ठ मानव बन सकते हैं। ये उद्गार मुख्यातिथि कोटा दक्षिण के विधायक संदीप शर्मा ने आर्य समाज विज्ञान नगर के परिसर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग साधकों के बीच व्यक्त किये।

इस अवसर पर अमरोहा से पधारीं आर्य विदुषी बीना रुस्तगी ने कहा कि योग से जीवन में सकारात्मकता आती है। हमारे भीतर आशा का संचार होता है, तथा नियमित योग करने से हम छोटी–छोटी शारीरिक व मानसिक बीमारियों से मुक्त हो जाते हैं। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि योग के माध्यम से भारत विश्वगुरु बनने की तरफ कदम बढ़ा दिये हैं। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के सुझाव पर यूएनओ के माध्मय से विश्व के 177 देश आज योग दिवस मना रहे हैं। यह हर भारतवासी के लिए गर्व की बात है।

विज्ञाननगर के पार्षद पवन अग्रवाल व रेखा लखारा ने सभी योग साधकों का आभार व्यक्त करते हुए आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। सांसद ओम बिरला के निर्देशन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में प्रात: 400 से भी अधिक स्त्री–पुरुषों ने भाग लिया। कार्यक्रम की व्यवस्था में कुंज बिहारी खण्डेलवाल, सुरेश लखेरा, मनोहरलाल गुप्ता, राजुल रास्तोगी, सोमेश कुमार गांधी, चन्द्रप्रकाश भारद्वाज आदि थे।

ऐतिहासिक उपलब्धि

दो अरब से अधिक लोग हुए योग दिवस में शामिल

भारतीय योग ने पूरे विश्व को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का जो संदेश दिया है वह सदियों बाद भी करोड़ो लोगों के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। इसा पूर्व दूसरी शताब्दी में जन्में महर्षि पंतजलि को योग का जनक कहा जाता है। हजारों वर्षों पहले उन्होंने जो क्रियाएं मानव शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बताई थी, वह आज भी उतनी सटीक और वैज्ञानिक है, जितनी आज से हजारों वर्ष पूर्व थीं। आधुनिक युग में व्यक्ति व्यायाम केवल शरीर बनाने के लिए करता है। बड़े-बड़े जिम में जाता है, शरीर को शक्ति पेय या भारी भोजन से, पाउडरों से गठीला बनाने की कोशिश करता है, परंतु यह सभी उपाय गौण हैं, जो कुछ समय के लिए सामने दिखते हैं और बाद में शरीर को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। केवल योग ही है जो मनुष्य के शरीर, मन, और आत्मा को सबल एवं सशक्त बनाता है।

विश्व ने आज योग के महत्व को समझा है और संयुक्त राष्ट्र ने 121वें संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में हर वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने विश्व से अपील की कि वह इससे होने वाले लाभों को व्यक्तिगत तंदुरूस्ती के साथ जनस्वास्थ्य में सुधार लाने, शांतिपूर्वक सम्बन्धों को बढ़ावा देने और सभी के लिए सम्मान जनक जीवन में प्रवेश के रूप में देखें। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने पहले सम्बोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के औचित्य का प्रस्ताव किया था। महासभा ने इस प्रस्ताव को रिकार्ड समय में स्वीकार किया। महासभा के 193 देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और 172 देश इसके सह-प्रयोजक बने। किसी ने इसका विरोध नहीं किया। प्रस्ताव का समर्थन करने वाले देशों में 47 इस्लामिक देश भी हैं। दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाना भारतीय योग को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिलना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी इसका आयोजन किया गया और संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून के साथ भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज भी इसमें शामिल हुई।

भारत के 650 जिलों में 2 हजार से भी अधिक योग शिविर लगाए गये। सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर उनका आयोजन किया गया। भारत सरकार ने विदेशों में भी योग प्रशिक्षकों को भेजा ताकि वे उन देशों में जाकर योगाभ्यास कराएं। देश की राजधानी में राष्ट्रपति भवन और संसदभवन के निकट राजपथ पर प्रधानमंत्री के सान्निध्य में 38 बलों के सदस्य भी शामिल थे। केन्द्रीय मंत्रियों ने अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में लगे योग शिविर में हिस्सा लिया। विश्व के 256 शहरों में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इतना सफल होगा, इसकी कल्पना शायद ही किसी ने की हो। इस अवसर योग के विश्व रिकार्ड भी बने विश्व के 84 देशों में एक साथ योग किया गया, लगभग 36 हजार लोगों ने एक साथ मिलकर योग किया।

योग का पूरे विश्व में जिस तरह से स्वागत और सम्मान हुआ वह प्रशंसनीय है। भारत ने योग के माध्यम से पूरे विश्व को जोड़ने का महान कार्य किया है। अब अर्द्धसैनिक बलों एवं पुलिस बलों के लिए भी योग को अनिवार्य किया जा रहा है। सभी स्कूलों में भी योग को पाठयक्रम के साथ जोड़ा जा रहा है। जो एक सही कदम है। प्रत्येक भारतवासी को योग से जुड़कर भारत के प्रत्येक हिस्से को मजबूत करना चाहिए और भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके मंत्रीमंडल के सभी सदस्यों को इस सराहनीय कदम की सफलता पर धन्यवाद देना चाहिए ताकि भारत विश्व के मानचित्र पर एक विशेष स्थान प्राप्त कर सके।

विचारणीय

माता-पिता की उपेक्षा क्यों?

समय धीरे-धीरे बदल रहा है जो बच्चे कल तक अपने मां बाप की उंगली पकड़ कर चलते थे उनकी मर्जी के बिना कोई काम नहीं करते थे वही आज अपने बूढ़े मां-बाप को अकेला छोड़ देते है। क्या बच्चों के लिए उनके बूढ़े मां-बाप इतने पराए हो जाते है। जिन बच्चों को पालने में मां-बाप ने अपनी सारी उम्र लगा दी। मेहनत से कमाई सारी पूंजी खर्च कर दी। आज उन्हीं बच्चों के पास मां-बाप के लिए समय नहीं है।

-आचार्य गवेन्द्र ओमप्रकाश चुटानी

आर्य समाज बचाने को आगे आओ आर्यो

अश्वनी कुमार पाठक

आर्य समाज की स्थापना एक क्रान्तिकारी तथा प्रगतिशील संस्था के रूप में महर्षि दयानन्द ने 1875 में की थी, जिसे अभी केवल 140 वर्ष ही हुए हैं। इतने अल्पकाल में इसने बड़ी उन्नति की है। भारत के लगभग सभी शहरों तथा अनेक ग्रामों के अतिरिक्त विदेशों में भी कई हजार आर्य समाजें स्थापित हो चुकी हैं तथा अनेक स्कूल, कालेज तथा गुरुकुल शिक्षा के लिए स्थापित हो चुके हैं, परन्तु 10-12 वर्षों से कुछ स्वार्थी तथा पदों के लालची लोगों ने आर्यसमाज की शिरोमणि सभा में मुकदमेबाजी कर रखी है, जिसका निर्णय अभी तक दिल्ली हाई कोर्ट भी नहीं कर सकी है। नेताओं में भयंकर फूट के कारण यह सभा दो धड़ों में बंट चुकी है। हाई कोर्ट इस सभा का चुनाव कराना चाहती है, परन्तु ये दोनों धड़े सहयोग नहीं दे रहे हैं। इसलिए आर्यसमाज टुकड़े-टुकड़े हो चुका है। दो सार्वदेशिक सभाएं कैसे चलाई जा सकती हैं? जबकि रजिस्टर्ड सभा तो एक ही हो सकती है।

आज टुकड़े-टुकड़े हो गया आर्यसमाज।/ अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग।।

कई विद्वानों को व्यक्तिगत पत्र लिखे हैं, तथा आर्यसमाज की पत्रिकाओं में लगातार 2-3 वर्ष से इस बारे में लेख लिखे हैं। परन्तु आश्चर्य का विषय है कि कोई भी नेता सार्वदेशिक सभा का चुनाव कराने के लिए आगे नहीं आ रहा। इसलिए परस्पर झगड़ों के कारण आर्य समाज की छवि धूमिल हो रही है। आर्य समाज का वेद प्रचार तथा अन्य परोपकार के कार्य ठप हो चुके हैं। नए सदस्य बन नहीं रहे, तथा पुराने दिवंगत हो रहे हैं। साप्ताहिक सत्संगों में हाजिरी घट रही है। युवक-युवतियां पश्चिमी देशों का अंधानुकरण कर रहे हैं। कुछ वृद्ध व्यक्ति ही आर्य समाजों में केवल हवन करके संतुष्ट हो रहे हैं। इसलिए पाखण्ड, अंध विश्वास खूब बढ़ रहा है। कुछ व्यक्ति आर्य महासम्मेलनों और कभी-कभी बहुकुण्डीय यज्ञों का आयोजन कर रहे हैं, परन्तु अब जनता आर्य समाज से दूर होती जा रही है, क्योंकि वेद प्रचार की कोई योजना नहीं है। और न ही कोई नया सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। अधिकांश आर्य सदस्यों के परिवार भी आर्य समाजी नहीं हैं। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा? हम हिन्दुओं से अलग नहीं हैं, परन्तु हमारा धर्म वैदिक है।

महर्षि दयानन्द ने अपने मन्तव्यों में कहा था कि मेरा धर्म सत्य सनातन वैदिक धर्म है। मैंने आर्य समाज कोई नए मत अथवा संप्रदाय के रूप में नहीं बनाया। इसलिए सबको अपना धर्म वैदिक धर्म ही लिखाना चाहिए। परन्तु आर्य समाज के नेताओं ने इस पर ध्यान नही दिया। वास्तव में हिन्दू कोई धर्म नहीं है। यह नाम तो हमें विदेशियों ने दिया था, जिसे अब कोई छोड़ना नहीं चाहता, परन्तु इसे छोड़ना ही होगा। अन्यथा आर्य समाज अधिक दिन नहीं चलेगा। वैदिक धर्म की स्थापना से ही आर्य समाज बचाया जा सकता है। धर्म और पंथ तो चलते ही रहते हैं, जबकि संस्थाएं हमेशा नहीं चलतीं। कहां है राजा राममोहन राय का ब्रह्मसमाज? क्या इसी तरह आर्यसमाज भी काल का ग्रास बन जाएगा? निष्ठावान आर्य विचार करें और आर्य समाज को बचाने के लिए आगे आएं। दिल्ली सभा के मंत्री विनय आर्य के मांगने पर उन्हें यह योजना भेजी है-

सबसे पहले सार्वदेशिक सभा का चुनाव तत्काल कराना और उसके बाद वैदिक धर्म की स्थापना करना। ये दो कार्य करने आवश्यक हैं। तभी आर्य समाज को बचाया जा सकता है। जो आर्य नेता सार्वदेशिक सभा का चुनाव कराने को उद्यत हो, उसे उच्च न्यायालय से एक वर्ष के लिए एडहाक अर्थात् तदर्थ प्रधान बनने की अनुमति ली जाए। वह अपनी कार्यकारिणी बनाकर उन प्रदेशों की प्रतिनिधि सभाओं के चुनाव कराए, जहां एक से अधिक सभाएं बन गयी हों। उसके बाद नियमानुसार सार्वदेशिक सभा का चुनाव कराएं। ऐसा नेता देश-विदेश में वेद प्रचार की योजना भी बनाए। सब आर्यों को वैदिक धर्म की दीक्षा भी दी जाए। सब लोग अपना धर्म वैदिक ही लिखें-लिखाएं, और परिवार सहित सत्संग में जाया करें। शीघ्र चुनाव कराने की योजना भी विनय आर्य को भेजी है।

-सी २३३, नानकपुरा,
साउथ मोती बाग, नई दिल्ली
फोन : २६८७१६३६

जनवाणी

आखिर हम पढ़े-लिखे भी क्यों हैं जाहिल

महोदय,

अभी कुछ दिनों पूर्व आगरा में यह अफवाह फैली कि रात में पत्थर की चक्कियाँ व अन्य सामान, जिसकी मरम्मत एक अनुभवी मिस्त्री करता है, उनकी मरम्मत स्वतः हो रही है। इसकी सूचना लोग फोन व अन्य माध्यम से अपने रिश्तेदारो एवं परिचितो आदि को दे रहें है। लोगो का मानना है कि जो व्यक्ति इस पर विश्वास नहीं करेगा वह पत्थर का हो जायेगा। कई जगह पत्थर होने की खबर फैली है। मैने भरी सभा में यह ऐलान किया कि मैं विश्वास नहीं करता में हो जाउ पत्थर का। मुझे दुःख है कि आज हम पढ़ लिखकर, मौबाइल, लेपटॉप, इटरनेट चलाकर भी अंधविश्वासी बने हूए है। ईश्वर ऐसे लोगो को सद्बुद्धि दें।

मुकेश कुमार, रिहावली (आगरा)

सराहनीय है 'ऐसे होते हैं आर्य' स्तम्भ

महोदय,

यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि आपने "आर्यावर्त केसरी" में ऐसे होते है आर्य शीर्षक के माध्यम से स्वामी दयानन्द के मिशन में लगे आर्यजनों का परिचय करा रहे है, इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र है। मैं भी स्वामी दयानन्द का छोटा सा सिपाही हूं और तन, मन, धन से इस महान कार्य में लगा हुआ हूं। 1सितम्बर 13 से 1सितम्बर 2014 तक मैने 70 परिवारों में यज्ञ कराया तथा वेदोपदेश किया, यज्ञ से जो दक्षिणा प्राप्त हुई उसमें कुछ धन का अशं अपनी ओर से मिलाकर प्रत्येक यज्ञ की दक्षिणा स्थानीय आर्य समाज को प्रदान की है। मेरा पारिवारिक यज्ञों का कार्यक्रम दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इसके अतिरिक्त स्थानीय आर्य समाज में साप्ताहिक यज्ञ सम्पन्न कराने का भी मुख्य रूप से उत्तरदायित्व मेरा ही है। मैं शनिवार को सांयकाल एक दो घंटा गांव में फेरी लगाता हूं तथा साप्ताहिक यज्ञ में आने के लिए ग्राम वासियों को प्रेरित करता हूं। मेरे इसी प्रयास का परिणाम है कि यह आर्य समाज सम्भवत: इसी क्षेत्र की श्रेष्ठतम आर्य समाजों में है। धन्यवाद।

-सुरेन्द्र पाल आर्य,
आर्यसमाज, औरंगनगर, राड़धना,
मेरठ, चल- 997133254

सर्वशिरोमणि भाषा हिन्दी

महोदय,

भोपाल में आयोजित 10वें अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में इस बार मुख्य थीम भाषा का विस्तार रखकर भारत सरकार ने दूरदर्शिता का परिचय दिया है। वो दिन दूर नहीं कि जब हिन्दी विश्व की सर्व शिरोमणि भाषा बनकर रहेगी।

डॉ. प्रज्ञा/दीपक कुलश्रेष्ठ
भोपाल (म.प्र.)

काव्य जगत

देवेन्द्र कुमार मिश्रा की दो कविताएं

बार-बार वही गलती

हम इतिहास से
सीखते नहीं
बस पढ़ते हैं
सीखा होता कुछ
तो वही 47 से
लेकर 2015 तक
उसी बात को
लेकर बार-बार न लड़ते
बार-बार न मरते
वही धर्म, भाषा
सरहदों की लड़ाई
हम बार-बार हजार बार वही
गलती दोहराते हैं
और इंसानियत
का मुंह काला करते हैं
पता नहीं हम किस बात पर
स्वयं को सभ्य और
सुशिक्षित कहते रहते हैं।

पैदायशी

आदमी पैदायशी
हिन्दू होता
तो राम-राम करता
पैदायशी मुसलमान होता
तो अल्ला-अल्ला करता
आदमी बस आदमी होता है
उसे हम
रट्टा मार-मार कर
परवरिश, पालन-पोषण
के नाम पर थोप देते हैं
कि तुम हिन्दू हो
मुसलमान हो
होता वह मासूम बच्चा ही है
जिसे सिखा पढ़ाकर हम
धर्म, जाति, भाषा का पट्टा
बांधकर सब कुछ
बना देते हैं
बस इंसान छोड़कर।

-पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म०प्र०)
मो० : 9425405022

बात समझ ले ये जनता

प्रकाश प्रजापति

सरकारें तो सरकारी हैं, बात समझ ले ये जनता
जिम्मेदारी सरकारी हैं, बात समझ ले ये जनता

संविधान की सरहद भीतर तोबा दर्द की फसलें कितनी
सिसकी पर सिसकी जारी है बात समझ ले ये जनता

तुष्टिकरण के कपड़े मुंह में ठूंस के आहें रोक रहे
ये भी उनकी हुशियारी है बात समझ ले ये जनता

सबके पास है एक ही जुमला हम तो जनता के सेवक
हाथ में खंजर सरकारी है बात समझ ले ये जनता

ये बासंती फूल नहीं हम बिना बात के ही खिल उठें
सावन के हम मल्हारी हैं बात समझ ले ये जनता

इस मलबे में दबकर रह गयीं जाने कितनी खारी यादें
सैलाबों पर बहस जारी है बात समझ ले ये जनता

भोलेपन को छोड़ेगी कब जानेगी प्रकाश भला ये
ये नासमझी बीमारी है बात समझ ले ये जनता

गऊ की महत्ता जानने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'अथ गोकरुणानिधि' अवश्य पढ़ें

आर्यसमाज के उत्सवों, समारोहों, पारिवारिक अनुष्ठानों आदि में बड़ी मात्रा में अपनी ओर से वितरित करें-

'अथ गोकरुणानिधि'

सैंकड़ों की संख्या में बांटने पर विशेष छूट उपलब्ध।

आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ.प्र.) से आज ही मंगाए यह बहुमूल्य पुस्तक।

८८वां उत्सव सम्पन्न

प्रज्ञा आर्या
नालंदा (बिहार)

आर्य समाज बिहार र ¯ नालंदा बिहार का 88वां वर्षिक उत्सव धूमध ाम से सम्पन्न हुआ। पांच कुण्डीय यज्ञ में आहुति देने हेतु सैकड़ों श्रद्धालु उमड़ पड़े। ब्रह्मा सुप्रसिद्ध साधक, आचार्य संजीवरूप ने अनेक यजमानों व यज्ञ प्रेमियों से छुड़वाई बुराइयां, दहेज न लेने, देने, बैण्डबाजे न बजवाने, आतिशबाजी न छोड़ने, यज्ञ-संध्या नित्य करने का संकल्प करायाा। आचार्य विजय देव वैदिक व कुलदीप विद्यार्थी सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ने भी विचार प्रस्तुत किये।

स्थापना दिवस मनाया

ततारपुर, हापुड़ (डॉ० प्रेमपाल शास्त्री) 31 जुलाई को गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर का स्थापना दिवस विद्यारम्भ एवं उपनयन संस्कार मनाया गया, जिसमें यज्ञ तथा भजन कुलदीप जी (बिजनौर) द्वारा हुए।

मर्यादा पुरूषोत्तम थे श्रीराम

आर्यसमाज हिरण मगरी में हुआ भव्य समारोह

कृष्ण कुमार सोनी
उदयपुर (राजस्थान)।

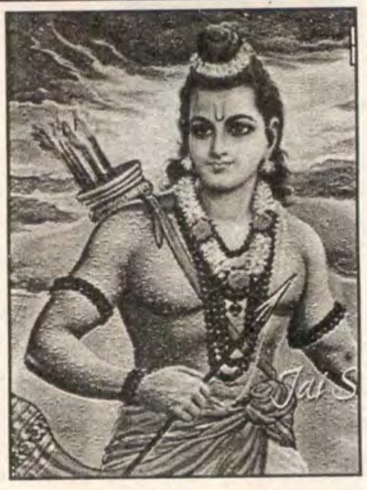

आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से आयोजित एक समारोह में नगर निगम के महापौर चंद्र सिंह कोठारी ने कहा कि श्री राम का जीवन प्रेरणास्पद है। हमारे यहां महापुरूष, महान वक्ता श्रोताओं और लेखकों की कमी नहीं है। कमी है तो हमारी कथनी और करनी में। हम जो कहते है वो करते नहीं। हमारी कथनी करनी एक होनी चाहिए। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम में समस्त मर्यादाओं एवं गुणों का समावेश था, ऐसा जीवन संसार के किसी अन्यपुरूष में देखने पर भी नहीं मिलता। इसलिए इनको मर्यादा पुरूषोत्तम के नाम से लाखों वर्षों से जाना जा रहा है।

मुख्य वक्ता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि श्री राम का जीवन हिन्दुस्तान में ही नही अन्य दूसरे देशों में भी आदर्श और प्रेरणा का केन्द्र रहा है। व्यक्ति के पारिवारिक राष्ट्रीय ही नहीं सम्पूर्ण मानव संस्कृति हमें राम के जीवन से समझने सीखने में सहायक होती है। राम का ही नहीं रामायण का अन्य पात्र भी हमें प्रेरणा देता है। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

किसानों को शून्य लागत से खेती का प्रशिक्षण

आचार्य रवीन्द्र के नेतृत्व में दो दिवसीय शिविर सम्पन्न

एक देशी गाय से की जाएगी ३० एकड़ तक खेती

बरेली। श्री हरि मंदिर प्रांगण में मुख्य अतिथिआचार्य रवीन्द्र जी के नेतृत्व में सुभाष पालेकर जी द्वारा आयोजित प्रवर्तित शून्य लागत प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण शिविर आज सम्पन्न हो गया। जिसमें एक देशी गाय से 30 एकड़ तक खेती की जायेगी। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में कल बरेली के पूर्व मेयर सुभाष पटेल, एमजेपी रूहेलखण्ड विवि के प्रति कुलपति प्रो. विजय पाल सिंह, लोक भारती के प्रदेश प्रतिनिधि गोपाल जी, शाहजहांपुर से संजय उपाध्याय, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक डा.सुनीता पाण्डे एवं डा.के.एस. शेखर भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर वार्ता का मुख्य विषय प्राकृतिक कृषि जिसमें भारतीय गाय के गोबर एवं मूत्र का उपयोग करके रासायनिक उर्वरकों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया। जिससे खेती लागत शून्य है तथा उपज की पूरी आय किसान की झोली में जायेगी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि व वक्ता आचार्य रविन्द्र ने बताया कि रासायनिक एवं मशीनरी खेती किसान के लिए अभिशाप एवं उसकी बर्बादी का कारण है। यह कृषि केवल व्यापार, उधोग, बहु भारतीय कम्पनी के लिए धन जुटाने के साधन मात्र बनकर रह गई है। शून्य लागत प्राकृतिक कृषि अभियान कार्यक्रम में बरेली, पीलीभीत, बदायूं, शाहजहांपुर आदि स्थलों से सैकड़ों की तादाद में आए किसानों ने उपरोक्त जानकारी प्राप्त कर अपनी जिज्ञासा शांत की और आयोजकों के प्रयासों की तह दिल से सराहना की। जनहित के इस अविस्मरणीय प्रयासों में मंचासीन अतिथियों के साथ पालीवाल, सुबोध अग्रवाल आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ध्यान दीजिए

◆ एक महंगे मोबाइल फोन के 70 प्रतिशत आकर्षण हम उपयोग नहीं कर पाते।

◆ एक बहुत महंगी कार की 70 प्रतिशत रफ्तार की हमें जरूरत नहीं।

◆ एक आलीशान बंगले का हम 70 प्रतिशत उपयोग नहीं कर पाते।

◆ एक कपड़ों से भरी अलमारी के 70 प्रतिशत कपड़े हम नहीं पहन पाते।

◆ एक पूरी जिन्दगी की कमाई का 70 प्रतिशत हम दूसरों के उपयोग के लिए छोड़ जाते हैं।

◆ इसलिए हम जो 30 प्रतिशत का उपयोग करते हैं उसका पूर्ण उपभोग करें और इसमें शामिल रहने का प्रयास करें। बहुत आनन्दित रहेंगे हम।

-डॉ. ब्रजेश कुमार

हमारे प्रतिनिधि मुकेश कुमार वर्मा

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा' वह नाम जो साहित्य-कला-संस्कृति व क्षेत्रीय फिल्म में जाना पहचाना बन गया है। मुकेश ने अब तक तीन बृज भाषी एलबमों व तीन टेलीफिल्मों में शानदार अभिनय किया है। देशभर से प्रकाशित होने वाली पत्र पत्रिकाओं में इन्हें पढ़ा जा सकता है। कई नामी पत्रिकाओं में मुकेश के कार्टून, रेखाचित्र छप चुके हैं। साथ ही जाने माने साहित्यकार व फिल्म निर्माता रहे पंडित नरेश कुमार शर्मा 'मुंबई' की पुस्तकों के मुख्य पृष्ठ पर मुकेश कुमार के चित्र छप चुके हैं। सर्व प्रथम आर्य समाज से जुड़ाव 'आर्यवर्त केसरी' के माध्यम से हुआ। फिर आशीर्वाद मिला पूज्य महात्मा चैतन्य मुनि हि0प्र0 का। आज केसरी के क्षेत्रीय संवाददाता की हैसियत से मुकेश काम कर रहे हैं। 'बृज लोक अकादमी, ऋषि वैदिक साहित्य पुस्तकालय, कुमार कम्यूनिकेशन व पैतृक काम कृषि को एक साथ देख रहे हैं। साहित्य जगत में अगर इन्हें किसी ने प्यार दिया, तो वे हैं श्री सनातन कुमार वाजपेई 'सनातन' म0प्र0 वाले। मुकेश की दो काव्य पुस्तिकाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। आप फिल्म, टेलीफिल्म, एलबंम, सीरियल, डाक्यूमेंट्री निर्माता निर्देशक, पत्र पत्रिका संपादक हैं। **पता है :-** मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा', ग्राम रिहावली, डाक तारौली गूजर, फतेहाबाद (आगरा) उ0प्र0।

-सम्पादक

दान क्या है?

सुमन कुमार वैदिक

सृष्टि के प्रारम्भ से यज्ञ के कर्मकाण्ड की कल्पना प्रारम्भ हुई तभी से हमारे यहां यज्ञ परम्परा गतों से होते आये हैं। जन्म, विवाह तथा अन्तिम संस्कार सभी यज्ञ से किए जाते है। ऋषियों ने कहा कि यज्ञ यदि जीवन से चला गया तो समझों जीवन से प्राण चला गया।

यज्ञ को इतना महत्व देने का कारण भी बड़ा स्पष्ट है। ऋषियों ने संसार के सुकर्म और सुचिन्तन का भी यज्ञ माना। संसार को परमात्मा का यज्ञ तथा शरीर को आत्मा की यज्ञशाला कहा। उन्होंने दो प्रकार यज्ञों के माने। आध्यात्मिक यज्ञ, जिसमें संसार के शुभकर्म, सुचिन्तन, मन को पवित्र बनाने को माना जिसके अन्तर्गत ही ब्रह्मयज्ञ, अतिथि यज्ञ, पितृ यज्ञ तथा बलि वैश्य यज्ञ आते हैं। देव यज्ञ, जिसमें अग्न्याधान कर अग्नि को सांकल्प देवताओं के लिए प्रदान किया जाता है। जिससे वायुमण्डल पवित्र बनता है भौतिक यज्ञ कहा। देव यज्ञ को सर्वाग पूजा का भी नाम दिया गया। बाकी सभी एकांगी पूजा मानी गई। देव पूजा के माध्यम से सभी देवता (जड़ और चेतन) की आहूतियों से प्रसन्न करते है। इसे पिच्चासी प्रकार की यज्ञशाला में अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड से किया जाता है। जिसे शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य ने बताया।

यज्ञ का दूसरा अंग संगतिकरण कहलाता है। जिसके अन्तर्गत समाज को जोड़कर यज्ञ में आहूतियां दिलाना है वहीं शुभकर्म, शुभ चिन्तन किया जाता है। जिसमें सुन्दर मिष्ठ, पुष्ट सामग्री का मिलान कर आहूति देना। जिससे वायुमण्डल को शुद्ध करने के साथ-साथ रोग भी दूर करने वाली हो। जिसे वैज्ञानिक परमाणुओं का संगतिकरण कर यन्त्रों को गति देते है उसी प्रकार यज्ञ की सामग्री कार्य करती है। तथा द्यौ से हमारा मिलान करा देती है।

जहां संगतिकरण आता है वहां त्याग की बड़ी विवेचना आती है। मानव को दानी बनना चाहिए इसलिए यज्ञ का एक अंग दान को माना गया है। दान किसे कहते है? जो दान देता है वह दानी कहलाता है। वेद मंत्रों में कहा है हे मानव तू दान में जाना चाहता है तो तू उस परमात्मा के दान को देख जो एक-एक वस्तु में पिरोया हुआ है। दान उसे कहते है जो देव पूजा कर अपने हृदय का शोधन कर रहा है और अपने द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है।

यज्ञमान बन आहूति देना दान नहीं कहलाता क्योंकि देवता तो हमारे शरीर में क्रियाकलाप कर रहें हैं, बह्माण्ड में कार्य कर रहे हैं यदि देवताओं को भोजन नहीं दिया जायेगा तो किसे दिया जायेगा?

वास्तव में दानी वह अपने प्राणों की हवि प्रदान कर देता है। प्राण कौन न्यौछावर करता है जो आत्म चेतनावादी है। वास्तव में दानी वह कहलाता है जो उदगीत गा रहा है। वेद मंत्रों से उद्गान गा रहा है उससे अपनी आत्मा को इतना बलिष्ठ बनाता है कि सर्प और सिंह जैसे हिंसक पशु भी मौन हो उसकी वाणी को श्रवण करने लगे वही दानी कहलाता है। ऋषि मुनि जो त्याग तपस्या से वायुमण्डल का शोधन करते हैं अपने विचारों को महानता में परिणत कर विचारों का दान दे रहें हैं। गर्भ में ही माता मदालसा, कौशल्या की तरह विचारों को देने वाली बालक को राष्ट्रवादी बनाने वाली, उसे ब्रह्मवेता बनाने वाली माता कितना पवित्र दान कर रही है राष्ट्र और समाज के लिए। द्रव्य का दान कोई विशेष नहीं कहलाता। विचारों का दान जिसे मानव लेखनी वद्ध करके चला जाता है जो एक प्रतिभा गीत बन जाता है दान कहलाता है। एक मानव किसी को ऊंचा बना रहा है। ऋषियों ने विचार किया कि संसार में उत्तम दानी वह प्रभु है।

(ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के प्रवचनों से)

सिर्फ साईं बाबा ही क्यों?

**पं. आर्य प्रहलाद गिरि
(आर्य गिरि)**

स्वयं संदिग्ध बने-निर्मल बाबा के भी कहने पर अनेक अंध श्रद्धालु लोग अपने-अपने पूजा घरों से शिवलिंगों को निकाल कर नदियों, तालाबों, मंदिरों में विसर्जित करने लगे। प्रभावहीन होते जा रहे शंकराचार्य जी के भी कहने पर ही सही, एक मांसाहारी मुस्लिम फकीर होने की सच्चाई जानकर सच्चे हिन्दू लोग अब अपने मंदिरों पूजाघरों से साईं बाबा को हटा रहे है।

लोभी-पाखंडी पुरोहितों के कारण ऐसे बहु देवतावाद में उलझे-भेड़ियाधसानी-हिंदुओं का अब पुन: एकेश्वरोंपासना की ओर मुड़ने के ये शुभ संकेत हो सकते है।

धर्म के धूर्त धंधेवाजों द्वारा तरह-तरह की कामनाओं को पूर्णकर देने का झूठा प्रचार कर-करा के किस्म-किस्म के नये-नये देवी-देवताओं पूजते फिरने की हिंदुओं में होड़ सी लग गयी है। सदाचार और ईमानदार से दूर ये स्वार्थांध लोग बिना विचारे ही देशी-विदेशी-अधर्मी-विधर्मी देवी-देवताओं को अपने पूजा घरों में भरते जा रहे है। इन सभी घुसपैठिये भगवानों को चिन्हित कर-करके निकालने की शख्त जरूरत हैं

पं. नेहरू कृत-विश्व इतिहास की एक झलक, पृष्ठ-694 में लिखा है- 'बेबीलोनी सभ्यता की देन-मूर्तिपूजा को बौद्धों ने ही सर्वप्रथम भारत में ग्रीस-यूनान से लाया।' अद्वितीय वेदोद्धारक महर्षि दयानंद भी अपने क्रांतिकारी ग्रंथ-'सत्यार्थ प्रकाश' में ऐसा ही लिखे हैं। वस्तुत: पूरे विश्व-मानवता के लिए एक निराकारेश्वर की उपासना का प्रवर्तक रहा-प्राचीनतम धर्म ग्रंथ-वेद में कहीं भी मूर्ति पूजा का जिक्र नहीं है।

इसी तरह महाभारत, गीता और भागवत पुराण के रचनाकाल तक योगेश्वर श्री कृष्ण के सगं नर्तकी राधा की कल्पना भी नहीं की गई थी। बहुत बाद में-बारहवीं सदी के ब्रह्मवैवर्त पुराणकार ने राधा के सगं श्री कृष्ण का इतना अश्लील-अभद्र चित्रण किया कि 19वीं सदी के ऋषि बंकिमचंद्र को अपने कृष्ण चरित पुस्तक में राधा के विरूद्ध पाठकों को सावधान ही करना पड़ा।

1970 के आसपास बनी फिल्म संतोषी माता की काल्पनिक मंदिरें बनाना और शुक्रवार को अरबी प्रथानुसार खटाई रहित गुड़-चने बांटना तो हम सबके सामने से ही शुरू हुए हैं। बंग्ला के सत्यनारायण पोथी में-''जे राम, सेई रहीम, वेद-कुराने किछु न अंतर, येई साधु-पीर-फकीर-पैगम्बर बोले।'' लिखा होना भी साईं बाबा का किसी धर्म ग्रंथ के गर्भगृह में घुसा होना से कम आपत्ति जनक नहीं है।

धर्म के सच्चे साहसी पहरेदारों (जिसकी संख्या हिंदुओं में नगण्य है) का कर्तव्य है कि ऐसे अनेक घुसपैठियों व प्रक्षिप्तांशों को दुराग्रह मुक्त हो के धर्मग्रथों से सफाई विदाई कराके ही दम लें।

(श्री संपादक जी, नमस्ते दुराग्रहों में रह इसे छापें न भले ही आप। सत्य को छुपाने का मुझको तो अब नहीं लगेगा पाप।।)

**मुख्य पुजारी- निंगेश्वर मठ, निंगा, आसनसोल (प.बंगाल)
मोबा. : 9735132360**

गुणकारी है हरा धनिया

डॉ. राधा माहेश्वरी

भोज्य पदार्थ में हरा धनिया डालने से भोजन रूचिकर होने के साथ अनेक गुणों से युक्त हो जाता है। हरा धनिया साग-सब्जियों को सुगंधित और अधिक स्वादिष्ट बना देता है। हरे धनिये के अभाव में सूखा धनिया डाला जाता है। धनिया स्निग्ध, वीर्य के लिए हितकारी, मूत्र उत्पन्न करने वाला, मल को रोकने वाला, पाक में मधुर और तीनों दोषों को मिटाने वाला है। यह प्यास, उल्टी, श्वास, खांसी, दुर्बलता एवं पेट के कृमि को मिटाता है।

रोगों में उपयोगी:- रतौधीं आंख का एक रोग है। यदि हरे धनिए की पत्तियों को कुछ अधिक परिमाण अर्थात दो ढाई-तोले तक आहार के साथ उपयोग किया जाए तो उक्त कष्ट मिट जाता है इसे दाल, कढ़ी, साग, सब्जी तथा रायता इत्यादि में मिश्रित कर सेवन किया जा सकता है।

पेट के गर्म होने पर:- हरे धनिए की पत्तियों का रस, सेंधा नमक डालकर घी तथा सौंफ से छौंककर तथा ठंडा कर भोजन के साथ लेने पर लाभ होता है।

इसी प्रकार हरे धनिए की चटनी भोजन के साथ सेवन कर लेने से अरूचि दूर होकर भूख लगती है। हरा धनिया छोटी इलाइची काली मिर्च का चूर्ण, घी और शक्कर मिलाकर लेने से भी अरूचि दूर होती है।

स्वास्थ्य सुधारने के लिए:- धनिए की पत्तियों को सलाद के साथ काम में लें।

सलाद में हरा धनिया खाने का तरीका यह है कि मौसमी फल, अमरूद, खीरा तथा ककड़ी इत्यादि एवं मौसमी सब्जी जैसे टमाटर, गाजर, मूली इत्यादि में से कोई भी दो-तीन चीजों को पानी से धोकर टुकड़े करें। ऊपरसे हरे धनिए की पत्तियों को कतर कर नमक काली मिर्च तथा नीबू का रस मिलाकर भोजन या नाश्ते के साथ इस सलाद को खाएं। महीने बीस दिनों के उपयोग से स्वास्थ्य में सुधार होगा।

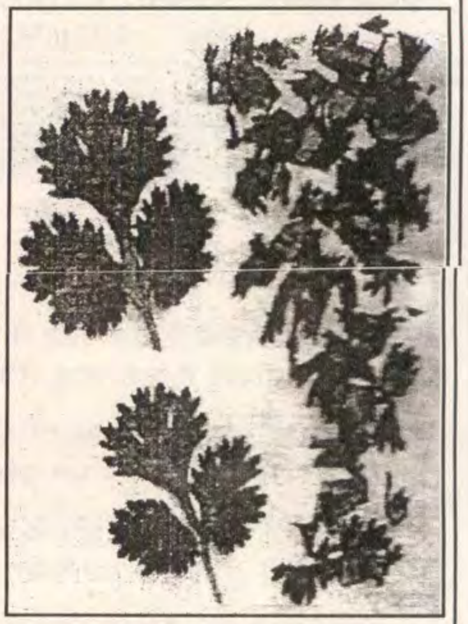

पित्त ज्वर में :- ज्वर मिटने के बाद यदि थोड़ी गर्मी शरीर में रह जाए, शाम को आंखे गर्म मालूम हों, साथ ही बुखार का भी अनुभव हो तो भोजन में ही हरे धनिए की पत्तियां मिलाकर लें। दो-चार दिनों में ज्वर की शेष उष्णता मिट जाएगी।

सूखी खांसी में:- ताजे या सूखे आंवले को चटनी के साथ हरे धनिए या पत्तियां पीस कर सेवन करें। खांसी में काफी आराम मिलेगा तथा कफ निकल जाएगा।

उल्टी तथा वमन में:- हरे धनिए के रस में सेंधा नमक और कागजी नींबू का रस मिलाकर लें, लाभ होगा।

अधिक प्यास में:- हरे धनिए को पत्तियों के रस में सूखे आंवले को पीसकर जल में मिलाने के बाद धनिए के रस में मिलाएं और कपड़े से छानकर रोगी को दें। प्यास रूकेगी, कंठ का सूखना और मुख का कड़वापन मिटेगा।

पेशाब रूकने पर:- हरे धनिए की पत्तियों का रस दो तोले और और एक तोला शक्कर मिलाकर दें। यदि एक बार देने से लाभ न हो तो दुबारा भी दें।

श्वास में:- धनिए की हरी पत्तियों के रस में सेंधा नमक डालकर देने से रोगी को श्वास की तकलीफ से लाभ होता है।

अन्य रोगों में :- हरे धनिए को कुछ देर पानी में भिगोंकर रखें फिर उसे मसलकर छान लें। इस पानी से आंखें धोने से खूब फायदा होता है। दुखती आंखे ठीक हो जाती हैं। मादक पदार्थों के नशे को उतारने के लिए हरे धनिए का रस लाभप्रद होता है। हरे धनिए का रस 100 ग्राम, तिल्ली का तेल 200 ग्राम मिलाकर अच्छी तरह उबाल लें। शीशी में रख लें। नित्य सिर में लगाने से दिमाग ठंडा होकर नेत्र ज्योति बढ़ती है। निरंतर प्रयोग करने से बालों का झड़ना रूक जाता है। हरे धनिए की पत्तियां तथा सौंफ को पानी में भिगोकर मसलकर छान कर पीने से आंव दोष दूर हो जाता है। दाह, जलन, प्यास, मूत्र जलन तथा बेचैनी दूर हो जाती है।

(साभार:- राष्ट्रिय कोहिनूर)

दर्शनीय है ऋषि जन्मभूमि टंकारा

ऋषि बोधोत्सव एक सुखद व अविस्मरणीय अनुभव

उमेश कुमार कुर्मी

आर्यसमाज कोटा जिला के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा की प्रेरणा से ऋषि जन्मभूमि टंकारा जाने का पवित्र विचार आया। इस पवित्र कार्य में मेरी धर्मपत्नि श्रीमती सुशीला जी का पूर्ण सहयोग रहा। कोटा से 19 तीर्थ यात्रियों का दल अहमदाबाद मोरवी होते हुए 15 फरवरी की रात नौ बजे टंकारा की पुण्यभूमि पर उतरा। बस स्टैण्ड पर उतरते ही भव्य ऋषिद्वार नज़र आया। ऋषिद्वार से होते हुए ऋषि बोधोत्सव स्थल पर पहुंचे। पहुंचकर पूछताछ कक्ष में पहले से आरक्षित कक्ष का नंबर बताया गया तथा बड़ी विनम्रता से भोजनशाला में जाकर भोजन करने का आग्रह किया। अपने कक्ष में पहुंचकर सामान रखकर भोजनशाला में जाकर गुजराती भोजन का आन्नद लिया। साफ सुथरे कक्ष में आकर रात्रि में विश्राम किया। अगले दिन प्रातः 4 बजे सभी जगकर शौच स्नानादि से निवृत्त होकर संध्या करके प्रभातफेरी के लिए रवाना हो गए। प्रभातफेरी में ईशभक्ति के गीत गाते हुए एक नए रोमांच के साथ टंकारा नगर की परिक्रमा करते हुए वापस कार्यक्रम स्थल पर आ गए। तब तक प्रातः काल का नाश्ता चाय, दूध भोजनशाला में तैयार था। सभी ने नाश्ता करके भव्य सुसज्जित यज्ञशाला में पहुंचकर यज्ञ प्रवचन का आनन्द लिया। यज्ञ पश्चात पुनः भोजनशाला में जाकर भोजन किया। भोजनशाला में आर्यसमाज भुज एवं कच्छ के भाई–बहनों द्वारा बहुत ही सुन्दर व्यवस्था की गई। वे सभी अतिथि देवों भवः की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए बहुत ही विनम्र भाव से भोजन परोस रहे थे। भोजन पश्चात एक घण्टा नियमित विश्राम करके युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए।

इस कार्यक्रम के सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा की ओर से बॉलीवाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच व्यायाम प्रर्दशन उपदेशक हाविद्यालय के बह्मचारियों आर्य न्या पाठशाला जामनगर की न्याओं को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये गए। इन सब कार्यक्रमों का संचालन श्री अजय सहगल (टंकारा वाले) के द्वारा किया जा रहा था। सायंकाल यज्ञ में पुनः भाग लिया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम 8:30 से 10:30 बजे तक भजनोपदेशक श्री कुलदीप शास्त्री (सपरिवार) एवं पं. सत्यपाल पथिक जी के भजनों का आंनन्द प्राप्त करते हुए डॉ. विनय विद्यालंकार (नैनीताल), डॉ. एस.के. शर्मा (मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) एवं श्रीमती वेद साहनी (जयपुर) के प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। अन्त में शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम को विराम दिया गया। दिनांक–17.02.15 को प्रातः 6 बजे प्रभातफेरी श्री गिजुभाई व्यास (94 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी) के नेतृत्व में आरंभ हुई। प्रभातफेरी में आज, कल के दिनों की अपेक्षा बहुत अधिक संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए। ईश्वर स्तुति से भजन गाते हुए पूरे टंकारा शहर में घूमे। पूरे प्रभातफेरी मार्ग को लाइटों के माध्यम से सजाया हुआ था। प्रभातफेरी से वापस आकर नाश्ता आदि करके यज्ञशाला में यज्ञ का लाभ प्राप्त करने पहुंचे। वहां मुख्य वेदी के अलावा 11 हवन कुण्ड भी यज्ञ करने के लिए लगाए गए। उक्त सभी कार्यक्रम श्री अजय सहगल के संचालन में बहुत ही मधुर एवं नपेतुले वाक्यों से सही समय पर संचालन हो रहा था। यज्ञ की पूर्णाहूति के पश्चात् ध्वाजारोहण कार्यक्रम श्री एचआर गन्धार प्रशासक एवं सलाहकार डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर एवं श्री एसके शर्मा जी द्वारा किया गया। पं. सत्यपाल जी पथिक द्वारा ध्वजगीत गाया गया।

ध्वजारोहण के पश्चात शोभायात्रा आर्य संन्यासियों एवं श्री अजय सहगल के नेतृत्व में मुख्य संचालन की लद्धाभाई पटेल के निर्देशानुसार प्रारंभ हुई। शोभायात्रा का उत्साह देखने योग्य था। करीब 60–70 संस्थाओं द्वारा बैंडबाजे, पंजाबी ढोल भांगड़ा नृत्य, पंजाबी धुन, लेजियम प्रदर्शन द्वारा ऋषि के भजनों का, ईश्वर स्तुति के भजनों, पिरामिड, व्यायाम प्रदर्शन आदि के द्वारा नगर के प्रमुख मार्गो द्वारा संचालन किया गया। नगर में इस शोभायात्रा का जगह–जगह पर छाछ, ठंडाजल, शरबत, नाश्ता, प्रसाद, पुष्पवर्षा द्वारा भव्य स्वागत किया गया। शोभायात्रा में बैंडबाजे भी विभिन्न भजनों की ध्वनि निकाल रहे थे। पूरी शोभायात्रा 3–4 किमी. लम्बी थी। शोभायात्रा के समाप्ति के पश्चात ऋषि दयानंद का जन्मस्थान तथा वह द्वार देखा जहां बालक मूलशंकर सच्चे शिव की खोज करने के लिए निकले। उसके पश्चात उस शिव मंदिर को देखनें गए जहां बालक मूलशंकर को बोध प्राप्त हुआ। उस छोटे से शिवमंदिर में जाकर 10 मिनट तक अवलोकन कर वापस कार्यक्रम स्थल पर आकर भोजन करके अपने कक्ष में चले गए।

दोपहर को मंच पर 3 से 5 बजे तक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें अध्यक्ष श्री सुरेशचंद्र अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात) एवं मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश कोहली (महामहिम राज्यपाल गुजरात सरकार) तथा विशेष उद्बोधन डॉ विनय विद्यालंकार (नैनीताल) श्री एसके शर्मा, श्री एचआर गन्धार थे। सायंकालीन कार्यक्रम स्थानीय आर्यसमाज ऋणहारड़ी टंकारा में हुआ।

इस प्रकार सायंकालीन भोजन के पश्चात रात्रि 8 से 11 बजे तक अध्यक्ष श्री योगेश भुंजाल तथा भजन श्री कुलदीप शास्त्री तथा पं सत्यपाल पथिक जी के द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इस कार्यक्रम में कन्याओं द्वारा महर्षि दयानन्द का पूरा जीवन चरित्र लघु नाटिका के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इसी प्रकार दिनांक–18.02 2015 को यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम प्रातः 8 से 18 बजे तक हुआ। प्रवचन आचार्य रामदेव जी युवा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक उपनिदेशक महाविद्यालय टंकारा) द्वारा की गई। ट्रस्ट की ओर से बहुत अच्छी व्यवस्था की गई। साफ– सफाई, भोजन, आवास की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। यज्ञशाला की सजावट तथा चारों ओर पेड़–पौधों का प्राकृतिक वातावरण बहुत शान्त तथा मन को प्रसन्न करने वाला था। इसके लिये टंकारा ट्रस्ट के श्री अजय सहगल एवं समस्त ट्रस्टी साध ुवाद के पात्र है। मैं स्वयं एवं श्री अर्जुनदेव चड्डा जी की ओर से बहुत–बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिनकी प्रेरणा से इस शुभ अवसर का लाभ प्राप्त हुआ।

मंत्री– आर्यसमाज गायत्री विहार, एफ–5 वसुंधरा विहार, बजरंगनगर, कोटा (राजस्थान) मोबा. : 07597304068

अंतिम (सोलहवां) संस्कार

नरसिंह सोलंकी

संसार के सभी जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, वृक्ष लताएं, मनुष्य आदि जो जन्म लेते है, उनका प्राणन्त निश्चित अवधि पर होना तयशुदा है। यह प्रकृति का नियम है। केवल परमात्मा ही अजर–अमर, अविनाशी, अदृश्य, अजन्मा, दयालु और न्यायकारी है। सारे जीव अपने जीवन में सदा ही उदरपूर्ति, वंशवृद्धि और अंत में समाप्ति की ओर अग्रसर होकर फिर नया जीवन पाते हैं और ऐसे ही सृष्टि कम चलता रहता है। मनुष्य बुद्धिमान होने के कारण सुख–दुख का अनुभव कुछ ज्यादा ही करता है। यहां एक मंत्र प्रासंगिक हैः–

ओउम् त्रयंबकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माम्तात।।

अर्थात जैसे खरबुजा जब कच्चा होता है तब बेल से तोड़ने पर भी नहीं टूटता लेकिन जब पक जाता है तो खरबूजा बेल से स्वतः ही अलग हो जाता है। पकने के बाद खरबूजा मीठा हो जाता है। उसे पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, मनुष्य आदि खा लेते है। लेकिन उसके बीज पेट में सुरक्षित रहते है। जब पशु या पक्षी दूर जाकर गोबर या बींट करते है तब वह बीज हजारों, सैकड़ों कोस दूर पहुंच कर बरसात के मौसम में उग जाता है। साधु महात्मा किसी की मृत्यु पर दुःखी नहीं होते। कहते है मनुष्य देह त्याग कर दूसरा जन्म लेता है, जैसे फटे व पुराने कपड़ों को बदल कर नया कपडा पहनतें है उसी प्रकार मनुष्य अपने कर्मो के आधार पर अगला जन्म लेता है जो कि पशु–पक्षी, कीट–पतंग इत्यादि योनियों को प्राप्त होता है। अगर अच्छे सद्कर्म किये हैं तो फिर मनुष्य का जन्म भी मिलता है, वह भी किसी अमीर, विद्वान या गरीब परिवार के घर में, जैसा उसने पुण्य कमाया है। वैसे पापपुण्य का फल इसी जन्म में मिल जाता है, छुटकारा कभी नहीं होता।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपना जीवन हमेशा स्वस्थ रखने का प्रयास करे। जिससे उसका जीवन लम्बी आयु प्राप्त करे व सदा आनन्दमय व परोपकारी बना रहे। इसका वेद में एक मंत्र है–

ओउम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताछुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीना श्याम शरदः शतं भूयश्च।। शरदः शतात्।। यजु 36/24

इसमे परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभू हमारा जीवन सौ वर्ष पर्यन्त स्वस्थ रहे। आंखो की रोशनी अच्छी रहे। कानो से उत्तम सुनाई दे व सभी इन्द्रियों व हाथ पैर बराबर काम करते रहे ताकि हमारा जीवन सर्वदा सदाचारी व परोपकारी होकर 100 वर्ष तक या अधिक सुख पुर्वक व्यतीत हो। अब सवाल उठता है कि परमात्मा से केवल सौ साल तक ही क्यो स्वस्थ रहने की कामना की गई है। वैसे तो अत्यधिक सावधानी बरतने वाले सदाचारी कुछ ही लोग होते है जो डेढ़ सौ से दो सौ वर्ष तक जीवित रहते है। पौराणिक कथाओ में यह दर्शाया गया है कि फलां साधु संत या असुर ने हजार बरस तक तपस्या की और मनवांछित फल पाया। ऐसी बातें कपोल कल्पित और वेद विरूद्ध है। संसार के सभी लोग वेदो को मनुष्य का आरम्भिक और प्रथम ग्रंथ लाखो वर्ष पहले अवतीर्ण हुए मानते है तो उसमे कहीं ऐसा कोई उदाहरण नहीं आया है।

अंत में एक वेद मंत्र जो इस अवसर पर सुनाना या व्यवहार में लाना अति आवश्यक है–

ओउम् वायुरनिलयमृतमथेदं भस्मानत शरीरम्। ओउम् कतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृत स्मर स्वाहा।।

यजु 40/15

यह मंत्र दर्शाता है कि मनुष्यों को चाहिए कि जैसी मृत्यु के समय में चित्त की वृत्ति होती है और शरीर से आत्मा को पृथक होना होता है वैसे ही इस समय भी जानें। इस शरीर को जलाने पर्यन्त किया करें। जलाने के पश्चात् शरीर का कोई संस्कार न करें।

मृत्यु पश्चात् श्राद्ध तर्पण मनाना पूर्वजों के प्रति श्रद्धा नहीं बल्कि एक मजाक है। कुछ भी खाने खिलाने व दान देने से उस आत्मा को मृत्यु पश्चात् कुछ भी नहीं मिलता है क्योंकि वह आत्मा पता नहीं कहां–कहां कितने जन्म लेकर कहां पहुंच चुकी है जिसका कोई अंदाजा भी नहीं है। हमारे माता–पिता व बुजुर्ग जब तक जिंदा है उनकी अच्छे प्रकार से सेवा सुश्रुषा करना ही परम् धर्म व सच्चा श्राद्ध है। इसे हमेशा ध्यान में रखिये।

मैंने जो जो बातें कहीं हैं वे सब वेद विद्याएं है, इसमे मेरा कुछ भी नहीं है। अगर आप वेदों को प्रमाणित ग्रंथ मानते हैं तो वेदो के बताये मार्ग पर चलेंगे तभी आप सभी का कल्याण होगा।

मंत्री आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर, राजस्थान
मो0–09413288979

असंतुलित जनसंख्या से बिगड़ता स्वरूप

अतुल कुमार शुक्ला

बढ़ती जनसंख्या के प्रति लोगों को आगाह करने के उद्देश्य से 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य आबादी की समस्याओं और विकास कार्यक्रम की ओर सरकारों और आम लोगों को ध्यान आकर्षित करना है। जनसंख्या दिवस की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र के विकास कार्यक्रम की गर्वनिंग काउन्सिल द्वारा 1987 में की गई थी। उस वर्ष विश्व की जनसंख्या पांच अरब को पार कर गई थी। आज विश्व की जनसंख्या 7 अरब से ज्यादा है। भारत की जनसंख्या 1 अरब 25 करोड़ के आसपास है। जनसंख्या के लिहाज से भारत विश्व का दुसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। आजादी के समय देश की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो चार गुना तक बढ़ गई है। परिवार नियोजन के कमजोर तरीकों, अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव, अंधविश्वास व विकासात्मक असंतुलन के चलते आबादी तेजी से बढ़ी है। भूभाग के लिहाज से हमारे पास 2.5 फीसद जमीन है और 4 फीसद जल संसाधन, जबकि विश्व में बीमारियों का जितना बोझ है उसका 20 फीसद अकेले भारत पर है। आज नियंत्रण आबादी में प्रत्येक साल आठ करोड़ का इजाफा हो रहा है और इसका दबाव प्राकृतिक संसाधनो पर स्पष्ट रूप से पड़ रहा है। विश्व समुदाय के समक्ष स्थानान्तरण भी एक समस्या के रूप में उभर रहा है। क्योंकि बढ़ती आबादी के चलते लोग बुनियादी सुख-सुविधा के लिए दुसरे देशों में पनाह लेंने को मजबूर हैं। भारत की आबादी, अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान और बांग्लादेश की कुल आबादी से भी अधिक है। ध्यान देने योग्य है कि भारत के कई राज्य विकास में भलें ही पीछे हो परन्तु उनकी जनसंख्या विश्व के कई देशों से अधिक है। जैसे तमिलनाडु की जनसंख्या फ्रांस से अधिक है और उड़ीसा अर्जेंटीना से आगे है। मध्यप्रदेश की जनसंख्या थाइलैण्ड से ज्यादा है तो महाराष्ट्र मेक्सिको को टक्कर दे रहा है। उत्तर प्रदेश ने ब्राजील को पीछे छोड़ा है तो राजस्थान ने इटली को पछाड़ा है। गुजरात ने साउथ अफ्रीका को मात दे दी तो पश्चिम बंगाल वियतनाम से आगे बढ़ गया है। हमारे छोटे-छोटे राज्यों से जैसे झारखण्ड, उत्तराखण्ड, केरल ने भी युगांडा, आस्ट्रिया, कनाडा, उज्बेकिस्तान को बहुत पीछे छोड़ दिया है। ब्राजील विश्व का पांचवा सर्वाधिक आबादी वाला देश है। बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या कुछ समय बाद चीन से अधिक हो जायेगी। भारत में जिस गति से आबादी बढ़ रही है उस हिसाब से देश के संसाधनो पर 2026 तक 40 करोड़ और लोगों का दबाव बढ़ जायेगा। मसलन अंतरराष्ट्रीय असमानताएं पहले की तुलना में अधिक बढ़ गई है। दुसरी तरफ जनसंख्या बेरोजगारी एक दुसरे से जुड़ी है जनसंख्या बढ़ेगी तो बेरोजगारी बढ़ेगी। तेजी से बढ़ती जनसंख्या से प्रदूषण की दर को बढ़ाया है। चिन्ताजनक बात तो यह है कि मनुष्य की जनसंख्या तो प्रतिदिन बढ़ रही है लेकिन धरती का क्षेत्रफल नहीं बढ़ सकता। बढ़ती आबादी भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं गम्भीर आर्थिक समस्याओं का कारण है। यदि सभी नागरिक ईमानदारी से सहयोग दें तो निश्चय ही देश की बढ़ती आबादी को रोका जा सकता है। तभी आबादी से उत्पन्न संकट दूर होंगे और देश खुशहाल होगा।

—मुरादाबाद

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबिल ट्रस्ट, नागपुर

आर्य जगत के सर्वोच्च पुरस्कारों के लिए जीवनदानियों, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों से आवेदन पत्र आमंत्रित

१. आर्य रत्न पुरस्कार सृ. सं. १९६०८५३११३.१४.१५.१६ के लिये पुरस्कार संख्या 4 प्रत्येक एक लाख रूपया 100,00,00 चार विद्वान जीवन दानियों से आवेदन पत्र आर्मत्रित है, जिनका पूरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाज सेवा, योग, शिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्ष प्राच्याविद्या, के प्रसार व प्रचार में नैष्ठिक जीवन के साथ निस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है।

२.आर्य विभुषण पुरस्कार सृ. सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 51000.00 रूपया इक्यावन हजार रूपयों का, उन विद्वानों को दिया जाऐगा, जिनका पूरा जीवन वेद-प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन, व समाज सेवा में लगा हो।

३. आर्य गौरव पुरस्कार सृ.सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 21000.00 इक्कीस हजार रूपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहा है।

4. आवेदन पत्र स्वयं या विद्वान के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति द्वारा भी दिया जा सकता है प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ विद्वान के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति का अनुमोदन भी साथ आना आवश्यक है।

सभी प्रस्ताव अनुभेदन के साथ ट्रस्ट के नीचे लिखे पते पर चयन-समिति के पास पहुच जाने चाहिए। बाद में आये प्रस्तावों पर बिचार नहीं होगा। पुरस्कारों के लिए आये आवेदन पत्रों पर चयन-समिति का निणर्य ही अन्तिम अविलम्ब मान्य होगा।

राव हरिश्चन्द्र आर्य
मैनेजिंग ट्रस्टी
पुरस्कार चयन-समिति
राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट
३८७ आर्यादय रूईकर मार्ग महल
नागपुर, ४४००३२ (महाराष्ट्र) मोबा.: 09422112001

ऋग्वेद || ओ३म् || यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद अथर्ववेद

गतांक से आगे.......

महर्षि दयानन्द ने समाज सुधार का कार्य क्यों चुना?

मनमोहन कुमार आर्य

इस कार्य ने महर्षि दयानन्द को बल वा शक्ति प्रदान की और वह वेदों के प्रचार में पूर्व की तरह सक्रिय रहे। महाभारत काल के बाद इतिहास में पहली बार धर्म की नगरी काशी में मूर्तिपूजा एवं इसके अनुयायियों व प्रवक्तों की सभी धार्मिक अन्धविश्वासपूर्ण क्रियाओं व कर्मकाण्डों का असत्य व निर्मूलता देश व समाज के सम्मुख आ गई परन्तु उन मूर्तिपूजा के समर्थक मिथ्याचारियों का स्वार्थ, अज्ञान व सुख सुविधायें वेदों की सत्य मान्यताओं को स्वीकार करने में बाधा बनी रहीं और आज भी न्यूनाधिक वही स्थिति है।

काशी में ही मई, १८७४ के महीने में प्रचार करते हुए स्वामी दयानन्द को अपने एक भक्त डिप्टी कलेक्टर राजा जयकृष्ण दास, सीएसआई से अपनी वैदिक मान्यताओं का एक ग्रन्थ लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई जिससे उन लोगों को जो किसी कारण उनके उपदेशों में सम्मिलित नहीं हो सकते थे वह व अन्य लाभान्वित हो सकें। इसके साथ उनके संसार के जाने के बाद भी वह ग्रन्थ देश भर में वैदिक धर्म के प्रचार का मार्गदर्शक व आधार बन सके, ऐसा आग्रह उनसे किया गया। महर्षि दयानन्द इस कार्य की महत्ता को तुरन्त समझ गये और उन्होंने इस स्वर्णिम प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और लगभग साढ़े तीन महीने में 'सत्यार्थप्रकाश' नाम से एक ग्रन्थ का लेखन व सम्पादन किया जो उनके वैदिक समस्त विचारों का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। कालान्तर में उन्होंने वेद भाष्य का कार्य भी आरम्भ किया और चारों वेदों की भूमिका के रूप में 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' ग्रन्थ सहित ऋग्वेद (मण्डल ७ सूक्त ६१ मन्त्र २ तक) तथा सम्पूर्ण यजुर्वेद का सरल संस्कृत व आर्यभाषा हिन्दी में भाष्य किया। समय समय पर उन्होंने संस्कार विधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि सहित खण्डन व मण्डन तथा शंकाओं व आलोचनाओं के निराकरण सहित कुछ लघु ग्रन्थ तथा वेदांगप्रकाश नाम से लगभग २४ छोटे बड़े ग्रन्थों का संसार के इतिहास में प्रथम बार आर्यभाषा हिन्दी में प्रणयन किया। इससे पूर्व धर्म-कर्म में संस्कृत का ही एकमात्र प्रयोग होता था। महर्षि दयानन्द ने जनसामान्य को धर्म का मर्म समझाने के लिए हिन्दी को अपने उपदेशों व ग्रन्थों की भाषा व माध्यम के लिए चुना। यह इतिहास की प्रथम घटना है जब साधारण से साधारण मनुष्य व दलित वर्ग के भाई भी ईश्वरोपासनार्थ सन्ध्या व हवन करते हुए वेदमन्त्रों का उच्चारण करते थे और इसके सत्य अर्थों से पूरी तरह से परिचित होते थे। उनमें वेदों पर प्रवचन करने की योग्यता भी होती थी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। इसके साथ महर्षि दयानन्द सत्य वेद धर्म के प्रचारार्थ व संवर्धनार्थ देशभर में भ्रमणकर वेदोपदेश से लोगों के धर्मविषयक अज्ञान तिमिर का नाश भी कर रहे थे। अनेक देशी राजाओं की रियासतों में जाकर भी उन्होंने वेदों का प्रचार किया। १० अप्रैल, १८७५ को उन्होंने मुम्बई के काकड़वाड़ी क्षेत्र के गिरिगांव मोहल्ले में आर्य समाज की स्थापना की थी। यह आर्यसमाज उनके समाज सुधारार्थ वेदान्दोलन को क्रियान्वित करने का प्रतिनिधि संगठन था। उनके सभी कार्यों पर दृष्टि डालने पर समाज सुधार हेतु किए गए कार्यों में आर्यसमाज की स्थापना और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व वेदभाष्य सहित सत्यार्थप्रकाश की रचना प्रमुख कार्य हैं। सन् १८८३ में स्वामी जी की मृत्यु के बाद वैदिक विद्वान पं. आर्यमुनि, स्वामी ब्रह्मुनि परिव्राजक, पं. तुलसीराम स्वामी, पंशिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, पं. जयदेव विद्यालंकार, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, दामोदर सातवलेकर, डॉ. रामनाथ वेदालंकार तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा वेदों के भाष्यों के प्रणयन का कार्य हुआ जिसका समस्त श्रेय महर्षि दयानन्द को है। इससे पूर्व ऐसा कार्य भारत व विश्व के इतिहास में नहीं हुआ था। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के अनुयायी अनेक वैदिक विद्वानों ने दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति सहित अनेकानेक विषयों पर मौलिक शास्त्रीय ग्रन्थ लिखकर भी वैदिक साहिय को समृद्ध किया है। इसके कारण वह देश व इतिहास में सदा-सदा के लिए अमर हो गये।

महर्षि दयानन्द ने समाज सुधार का कार्य वेदविहित ईश्वराज्ञा एवं अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की प्रेरणा तथा स्वकर्तव्य के कारण किया। ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में लोगों को अज्ञान से बचाने के लिए वेदों का ज्ञान दिया था और यह अपेक्षा की थी वह ऋषि स्वयं वेदों का प्रचार करते हुए ऐसी परम्परा स्थापित करें जिससे सृष्टि के अन्त तक वेदों का प्रचार होता रहे तथा जिससे अज्ञान व अज्ञानमूलक मत-मतान्तर-पन्थ-सम्प्रदाय-मजहब-धर्म आदि न पनप सकें। वेदों अर्थात् सत्य ज्ञान का प्रचार व प्रसार ही मनुष्य का परम धर्म है। इसके लिए महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में कहा है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना सब आर्यों-मनुष्यों का परम धर्म है।' यह मनुष्यों का कर्तव्य व परम धर्म होने के साथ समाज सुधार व देश के सशक्तीकरण का भी मूल मन्त्र है जिसे महर्षि दयानन्द ने गुरु जी प्रेरणा से प्राप्त किया और उसे पकड़ कर उसका अपूर्व रीति से प्रचार व निर्वाह कर देश से अज्ञान के अन्धकार, अन्धविश्वासों, कुरीतियों व पाखण्डों सहित समस्त सामाजिक असमानताओं को मिटाकर सबको न्याय प्रदान किया व कराया। यह खेद है कि आजकल के विश्वविद्यालयों में पढ़े व शिक्षित बन्धु समाज सुधार, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि सहित सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग को अपने जीवन क लक्ष्य नहीं बना सके जिसका कारण देश व समाज का आज भी अज्ञान व अन्धविश्वासों में फंसा होना है। यदि महर्षि दयानन्द समाज सुधार के लिए वेदों का प्रचार प्रसार, ग्रन्थ लेखन, देश भ्रमण कर वेदोपदेश, शास्त्रार्थ व लोगों का पथप्रदर्शन न करते तो आज का भारत इतना भौतिक विद्याओं से शिक्षित व समुन्नत न होता और सम्भव है कि बहुत से लोगों के विधर्मी हो जाने व बना दिये जाने से देश के सामने आज से अधिक सामाजिक व राजनैतिक समस्यायें उपस्थित होतीं। आज भी वेदों के प्रचार प्रसार व महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के अनुसार आध्यात्मिक क्रान्ति की आवश्यकता है जिसका आरम्भ महर्षि दयानन्द ने अपने समय में किया था। संक्षेप में हम यह कहेंगे कि महर्षि दयानन्द ने संसार से अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, पाखण्ड, सामाजिक भेदभाव मिटाकर सबको समानता का अधिकार देने का अपनी ओर से हर सम्भव प्रयत्न किया। वह इतिहास में ऐसे पहले मनुष्य भारतीय वैदिक धर्मी पण्डित व विद्वान थे जिनके सभी मतों मुख्यतः ईसाई पदाधिकारियों, राज्याधिकारियों एवं मुस्लिम मौलवी एवं विद्वानों आदि से भी मैत्रीपूर्ण व आत्मीय सम्बन्ध थे। उदयपुर, शाहपुरा आदि अनेक रिसायतों के राजा उनके चरणों में गहरा अनुराग व भक्ति रखते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने उनकी स्मृति में राष्ट्रस्तरीय गुरूकुल कांगड़ी, दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कालेज व अनेक पाठशालायें, महिला विद्यालय आदि खोलकर उनके स्वप्न को साकार करने की कोशिश की। देशभक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द आदि ने उनके विचारों से प्रभावित होकर ही देश की आजादी के आन्दोलन में भाग लिया था। उनके अनुयायियों ने अनाथालय, वनिताश्रम खोलकर व छुआछूत सहित समाजिक असमानता दूर करने का उल्लेखनीय कार्य किया। देश व समाज के सुधार व उन्नति में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। इन्हीं पंक्तियों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं।

पता : १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
फोन : ०९४१२९८५१२१

जन्मदिवस और बर्थडे में अन्तर

पं० विष्णुदेव बिसेसर, मॉरीशस

प्रायः मॉरीशस में जन्मदिवस के अवसर पर सभी लोग यज्ञ भजन सन्देश का कार्यक्रम करते हैं। कुछ लोग रामायण पाठ आदि करते हैं। मैं उसी अवसर पर एक यज्ञ कर रहा था। जिस भवन में लगभग 150 लोग आमंत्रित थे। मैं यज्ञ को क्रियोली भाषा में समझा रहा था। लोग बड़ी चाह से भाग ले रहे थे। यज्ञ के बाद मेरा संदेश था जन्मदिवस और बर्थडे।

आज हमारे आर्य समाजी भी फिल्मों की तरह बर्थडे पार्टी कर रहे हैं, जिससे हमारे वैदिक धर्म पर बुरा असर हो रहा है। इन दोनों में फर्क यह है कि हम यज्ञ, भजन, सत्संग, बधाई, आशीर्वाद देते हैं। प्रसाद, प्रसाद, भोग, चाय का महाप्रसाद भी परोसते हैं। हर्ष के साथ अपने घर जाते हैं। दूसरी ओर अण्डे की केक रखते हैं, जिस पर कैण्डल रखते हैं। फिर कैण्डल को मुंह से बुझा देते हैं, जिस पर मुंह से थूक भी छिटकता है, और 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' कहते हैं। क्रियोली भाषा (मॉरीशयन भाषा) में टोयेर कहते हैं 'किल हिम' मार डालो। शराब और बीसाइन मास चलाते हैं, थोड़ा शराब के नशे में डसरों के माला पहनके कमर में हाथ डालकर नाचते और कानाफूसी करते हैं। अन्त में लड़ाई-झगड़ा और दर्द के साथ अस्पताल जाना पड़ता है।

इतना कहते हुए कि शहर से कुछ महिलाएं उठ खड़े हुए कहते हैं पं0 जी जो कुछ आप कहेंगे, हमें मानना पड़ेगा। जन्मदिवस एक बार आता है, हम धूमधाम से मनाएंगे और केक भी काटेंगे। मैंने समझाने की पूरी कोशिश की कि बहना आप यज्ञ करें या पूजा करें या घर पर बढ़िया भोजन तैयार करके अपने परिवारों के साथ ग्रहण करें। इससे बढ़िया और क्या। मैंने कहा कोई बात नहीं, एक दिन तुम पछताओगे।

यह घटना सच्ची है, कोई कहानी नहीं है। कुछ महीने बाद उनके पतिदेव का जन्मदिन था। खूब सज धज कर तैयारी हो रही थी। देव खानपान के साथ राक्षस खानपान भी तैयार हो रहा था। खास फिल्मों की तरह कि कल पांच बजे शाम में केट काटा जाएगा और नाचगान भी होगा। लेकिन तैयारी के समय पतिदेव को अचानक पेट में दर्द उठा, अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर के देखने के बाद वहीं रहना पड़ा और कल जिस समय केक काटना था, उस समय पेट काटा जा रहा था। ऑपरेशन करना पड़ा। एक खतरनाक बीमारी आन पड़ी। कुछ महीने रहा, फिर जाना पड़ा। किसी दुश्मन के साथ भी ऐसी घटना न हो।

अन्त में मेरा कहना यही है कि यदि हमारा जन्म आर्य हिन्दू परिवार में हुआ है, तो हमें वेद के मंत्रों को अवश्य मानना होगा। यज्ञ, सत्संग और संस्कार करना ही होगा। इसी में हमारी भलाई है। कल्याण होगा। जैसे कहते हैं कि देखा-देखी पुण्य, देखा-देखी पाप। वैदिक धर्म कोई कॉमर्शियल या दिखावा नहीं है। वेद ही सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। वैदिक धर्म ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है, और आर्य समाज ही सर्वश्रेष्ठ है धरती पर।

मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

अभिनन्दन समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान गत 17 वर्षों से विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों, एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसारार्थ जीवनदानी, विद्वान, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करने के कार्य में संलग्न है। उसीशृंखला में इस वर्ष भी यह अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह 25 अक्टूबर 2015 को दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशवपुरम्, नई दिल्ली में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद सेप्रातः 8 से दोपहर 1 बजे तक सम्पन्न होगा। कार्यक्रम में पं0 सत्यपाल पथिक, सुधानन्द योगी, डॉ0 सरिता आर्य, डॉ0 कमलेश आर्य, रणजीत आर्य, आचार्य सुमन, बुद्धदेव शास्त्री, वेदपाल पूनम आर्य को सम्मानित किया जाएगा। समारोह में स्वामी आर्यवेश, कैलाश गहलौत, प्रवीण कुमार आर्य, जसवीर सिंह मलिक, रणबीर शास्त्री, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, डॉ. धर्मपाल, राम कुमार गहलावत, जसवंत सिंह देसवाल तथा मधु आर्य आदि के व्याख्यान होंगे।

इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित अनेक छात्र/छात्राओं को लाखों रुपये की छात्रवृति दी जाएंगी। **पता है- रामपाल शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान, ६०बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-११००२९, मोबा. : 9810283782, 9968357535**

हिरण मगरी में पंचकुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न

उदयपुर। आर्य समाज हिरण मगरी एवं शीतला माता पार्क विकास समिति के संयुक्त तत्वाधान में शीतला माता पार्क सेक्टर नं. 5, प्रभातनगर में पंच कुण्डीय यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा इंद्र प्रकाश यादव व अनन्त देव जी शर्मा रहे। प्रधान भंवरलाल आर्य ने स्वागत उद्बोधन दिया। मदृयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने कहा कि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है। इंद्रदेव पियूष ने भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के मंत्री ललिता मेहरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। शीतला माता पार्क विकास समिति की उपाध्यक्ष कौशल्या देवी एवं वार्ड की पार्षद सीमा साहू ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

मुस्लिम संस्था ने खोली गोशाला

सुमन कुमार वैदिक
मेवात (हरियाणा)।

मेवात जिले के ग्राम मोहम्मदपुर नगर में मुस्लिम संस्था ने गोशाला खोली है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ट प्रचारक एवं राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के राष्ट्रीय संयोजक इन्द्रेश कुमार ने बताया कि 13 सितम्बर को मेवात जिले के फिरोजपुर झिरका में मुस्लिम गोपालन सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर इन्द्रेश ने कहा कि मेवात दंगा वाला नहीं, मोहब्बत वाला मेवात बने। मौलाना इलयासी ने कहा कि गोहत्या से दूसरों की आस्था पर चोट पहुंचती है, इसलिए इसको मुसलमानों को छोड़ देना चाहिए। जीवरक्षा और मानव विकास समिति के अध्यक्ष आबिद हुसैन ने कहा कि उन्होंने ढाई एकड़ जमीन में गोशाला बनाई है।

आर्य वाचस्पति द्वारा वैदिक धर्मप्रचार

वैभव तोषनीवाल
ब्यावर (राजस्थान)

आर्यसमाज में स्थापित पं० आर्य अमरसिंह वाचस्पति भजनोपदेशक ने 2014-15 में ब्यावर में अनेक गृहप्रवेश व अन्य संस्कार कराने के साथ ही रोहणी, दिल्ली, सान्ताकुज, बम्बई, पीपाड़ शहर, पूजला, टंकारा, अहमदाबाद, आदि सहित विभिन्न स्थानों में संस्कार कराये। संजय आर्य के सहयोग से झाझा के गांवों में झारखण्ड में प्रचार कार्य, कबीर बस्ती मगहर, पुरुषा (उ०प्र०) में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव

गुड़गांव। 9 सितम्बर को स्त्री आर्य समाज सुशान्त लोक का द्वितीय वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, प्रवचन हुए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि निर्मला रहेजा, वेदवती वैदिक तथा वेदप्रताप वैदिक थे।

दिल्ली। आर्यसमाज, राधापुरी दिल्ली का 60वां वार्षिकोत्सव 2 अक्टूबर को आयोजित किया गया, जिसके प्रचार के लिए 27 सितम्बर को प्रभात फेरी निकाली गयी। यह जानकारी रमेश चन्द्र प्रधान द्वारा दी गयी।

दिल्ली। आर्य समाज नारायण विहार, दिल्ली का श्रावणी वेदकथा का आयोजन 14 से 20 सितम्बर तक किया गया। चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा प्रवचन दिये गये।

महेन्द्रगढ़। आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ का वार्षिकोत्सव 26-27 को मनाया गया, जिसमें पं० मदन मोहन (गंगापुर सिटी) तथा सुमन कुमार वैदिक (आर्यावर्त केसरी) को आमंत्रित किया गया। प्रधान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने यह सूचना दी।

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर.-05922-262033, चल.- 08273236003, 09412139333

भरपूर ताकत के लिए सदा प्रयोग करें मुग़ल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है या डाक द्वारा मंगाएं।

निल स्पर्म रोगी व बेऔलाद अवश्य मिलें

हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)

मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317

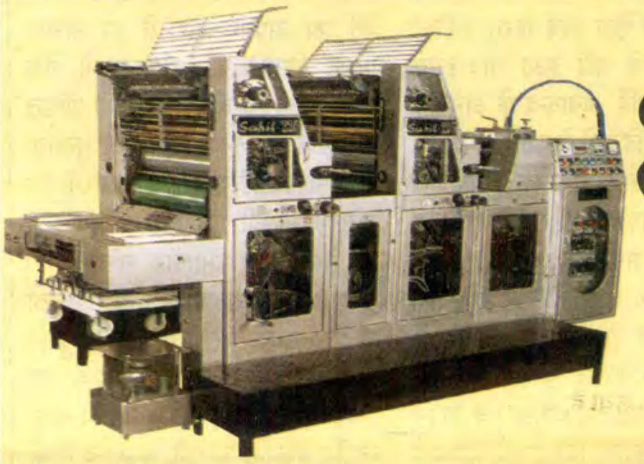

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये 225 में 1000 कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, अमित कुमार, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com